Class: B.A. 3 year

Subject: Music (Vocal/Instrumental)

Course Code: MUSA308PR

Course Name: GENERIC ELECTIVE GE-2
VOCAL/INSTRUMENTAL
(HINDUSTANI MUSIC)

MUSIC
(Hindustani Music)

Lesson : 1 - 12

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	भैरव राग का परिचय तथा अलंकार (वादन के संदर्भ में)	1
5	इकाई - 2	यमन राग का परिचय तथा अलंकार (वादन के संदर्भ में)	18
6	इकाई - 3	मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक (सितार वादन के संदर्भ में)	34
7	इकाई - 4	भैरव राग की रजाखानी/द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	45
8	इकाई - 5	यमन राग की रजाखानी/द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	55
9	इकाई - 6	भैरव राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)	68
10	इकाई - 7	यमन राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)	82
11	इकाई - 8	भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	95
12	इकाई - 9	यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	106
13	इकाई - 10	ताल तीनताल दादरा ताल	120
14	इकाई - 11	झाला (सितार वादन के संदर्भ में)	130
15	इकाई - 12	तान तथा उसके प्रकार (गायन के संदर्भ में)	148
16		महत्वपूर्ण प्रश्न	159

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA308PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन तथा मौखिकी का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक तथा मौखिकी परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में वादन के संदर्भ में भैरव राग का परिचय तथा अलंकार आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में वादन के संदर्भ में यमन राग का परिचय तथा अलंकार आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में वादन (सितार) के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में गायन के संदर्भ में भैरव राग की रजाखानी/द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में गायन के संदर्भ में यमन राग की रजाखानी/द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में गायन के संदर्भ में भैरव राग का परिचय तथा अलंकार आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में गायन के संदर्भ में यमन राग का परिचय तथा अलंकार आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में गायन के संदर्भ में भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में गायन के संदर्भ में भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में ताल पक्ष के संदर्भ में तीन ताल, दादरा ताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में वादन (सितार) के संदर्भ में झाला, उसके प्रकार आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में गायन के संदर्भ में तान, उसके प्रकार आदि का वर्णन किया गया है।
प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

COURSE CODE MUSA308PR
B.A. 3rd YEAR, GENERIC ELECTIVE GE-2
VOCAL/INSTRUMENTAL (HINDUSTANI MUSIC)

Title: Practical **Credits: 6**

Rãga – Bhairav, Yaman

Taals - Teentaal, Dadra

Guided listening sessions of classical vocal/instrumental music.

Instrumental Music:-

1. Aaroh, Avroh and Pakad in both the ragas.
2. Basic strokes of sitar
3. Five Alankars based on stroke patterns
4. One Razakhani Gat/Drut Gat in any of the Prescribed ragas
5. Elementary knowledge of Jhala playing

Vocal Music:-

1. Aaroh, Avroh and Pakad in both the ragas.
2. Knowledge of voice culture
3. Five Alankars
4. One SwarMalika/Drutkhayal in any of the prescribed ragas
5. Variety of Taan patterns

इकाई-1
भैरव राग का परिचय तथा अलंकार
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	भैरव राग का परिचय तथा अलंकार (वादन के संदर्भ में)
1.3.1	भैरव राग का परिचय
1.3.2	आरोह, अवरोह, पकड़
1.3.3	अलंकार
1.3.4	भैरव राग के अलंकार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह प्रथम इकाई है। इस इकाई में वादन संदर्भ में, भैरव राग का परिचय, आरोह, अवरोह, पकड़ तथा उसके अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है। इसे पलटा भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा इन्हीं अलंकारों मे माध्यम से अन्य अलंकारों की रचना करने में सहायता मिलती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भैरव राग के स्वरूप के साथ-साथ उनमें बजाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक अलंकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से भैरव राग के , आरोह, अवरोह, पकड़ तथा अलंकारों को सितार वाद्य पर बजा सकेगें।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरव राग के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- भैरव राग के अलंकारों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- भैरव राग के अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, भैरव राग के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, भैरव राग के अलंकारों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, भैरव राग के अलंकारों को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, वादन के अंतर्गत, भैरव राग में अलंकारों के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 भैरव राग का परिचय तथा अलंकार (वादन के संदर्भ में)

1.3.1 भैरव राग का परिचय

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - रिषभ, धैवत कोमल (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - कलिंगड़ा

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सा नि ध, प म ग म रे सा

पकड़ - नि़ सा ग म धध प, म ग म रे रे सा

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी धैवत तथा संवादी रिषभ है। भैरव राग का समय दिन का प्रथम प्रहर माना गया है।

भैरव राग में रिषभ को लगाने का अलग तरीका है। अगर हमने आरोह करते समय षड्ज से ऋषभ, गंधार, मध्यम तक जाना हो तो हम रिषभ का प्रयोग करते हैं, जैसे- सा रे, सा रे ग सा रे ग म। परन्तु यदि हमने पंचम का प्रयोग करना हो तो हम रिषभ का लंघन करते हैं, जैसे- सा रे ग म, सा ग म प अर्थात् उत्तरांग की तरफ जाते समय (पंचम या उससे आगे) हम रिषभ का लंघन करते हैं। अवरोह करते समय रिषभ पर आंदोलन किया जाता है। यह आंदोलन दो, तीन बार तक किया जाता है। इसी प्रकार धैवत पर भी आंदोलन होता है। धैवत पर आंदोलन आरोह तथा अवरोह दोनों तरफ होता है जबकि रिषभ में केवल अवरोह के समय ही आंदोलन किया जाता है; जैसे- ग म ग रे रे ऽ रे ऽ ग म नि ध ऽ ध ऽ प।

यह एक स्वतंत्र राग है। इसमें किसी अन्य राग की छाया नहीं आती है। कई अन्य रागों में भैरव अंग जोड़कर अन्य रागों की रचना की गई है, जैसे- भैरव बहार, अहीर भैरव आदि। भैरव का समप्रकृतिक राग कलिंगड़ा है। भैरव राग जहाँ गंभीर प्रकृति का राग है वहीं कलिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर न्यास किया जाता है वहीं कलिंगड़ा में गंधार तथा पंचम पर न्यास होता है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर आंदोलन अधिक रहता है। यह आंदोलन ही भैरव का मुख्य अंग है परन्तु कलिंगड़ा राग में इस प्रकार का आंदोलन बहुत कम रहता है।

1.3.2 आरोह, अवरोह, पकड़

आरोह-अवरोह

आरोह का अर्थ है ऊपर चढ़ना तथा अवरोह का अर्थ है नीचे उतरना। संगीत में आरोह-अवरोह का अर्थ है: जब नाद के आधार पर, नीचे से ऊपर अर्थात किसी स्वर से उपर के स्वर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते हैं और इसके ठीक विपरीत नाद के आधार पर, ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है। गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहा जाता है। गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहा जाता है। आरोह तथा अवरोह राग के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाले वे पारिभाषिक शब्द हैं जो अधिकांशतः साथ-साथ प्रयुक्त होते हैं। आधुनिक राग लक्षणों में आरोह-अवरोह भी एक लक्षण है, उदाहरण के लिए

सा रे ग म प ध नि सां आरोही क्रम है और

सां नि ध प म ग रे सा अवरोही क्रम है।

आधुनिक राग लक्षण के अन्तर्गत आरोह-अवरोह का महत्व इसलिए भी अधिक है कि इनके द्वारा राग में स्वरों का प्रयोग किस क्रम में हुआ है कि निश्चित जानकारी प्राप्त होती है, क्योंकि आरोह-अवरोह का निर्माण उस राग के वर्जित स्वरों को छोड़कर एवं शेष स्वरों के प्रयोग द्वारा होता है जिससे इनके द्वारा स्वरों का प्रयोग किस क्रम में होगा, स्पष्ट होता है, साथ ही साथ आरोह-अवरोह राग की जाति के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यदि आरोह-अवरोह में सात-सात स्वर लगते हों तो सम्पूर्ण जाति यदि छः-छः लगते हों तो षाडव और यदि पांच-पांच स्वर लगते हों तो औडव जाति कहा जाता है। इसी प्रकार से यह अन्य जाति व उपजातियों के निर्धारण में सहायक सिद्ध होते हैं। नाद के आधार पर किसी स्वर से उपर के स्वर पर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते है और ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है।

पकड़

'पकड़ शब्द बोलचाल की भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ-पकड़ना, काबू करना व नियन्त्रित करना से लिया जाता है। 'पकड़ शब्द का यही अर्थ संगीत में यथावत ग्रहण किया गया है जिसका अर्थ है राग का वह छोटा सा समुदाय जिससे राग को पहचाना जा सके, उसे पकड़ कहते हैं। रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को पकड़ कहते हैं।

प्रत्येक राग में एक ऐसा स्वर समूह या समुदाय होता है जिसे गाने या बजाने से उसे राग का स्वरूप स्पष्ट तथा व्यक्त होता है। इसी विशिष्ट स्वर समुदाय को उस राग की पकड़ कहा जाता है जैसे राग भैरव की पकड़ सा रे ग म प ग म रे रे सा है। इस छोटे से स्वर समुदाय को गाते या बजाते ही राग भैरव का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है अर्थात इस पकड़ को गाते या बजाते ही श्रोताओं को राग भैरव का स्पष्ट बोध हो जाएगाता है।

1.3.3 अलंकार

प्राचीन ग्रंथकार 'अलंकार' की परिभाषा इस प्रकार करते हैं:-

विशिष्ट वर्ण संदर्भलंकार प्रचक्षते।।

अर्थात् -कुछ नियमित वर्ण-समुदायों को 'अलंकार' कहते हैं। 'अलंकार' का अर्थ है 'आभूषण' या 'गहना। जिस प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकारों के द्वारा गायन की शोभा बढ़ जाती है। 'अभिनव रागमंजरी' में लिखा है :-

शशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।

अविभूषिते कांता गीतिरलंकारहीना स्यात् ।।

अर्थात् - जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि, जल के बिना नदी, फूलों के बिना लता तथा आभूषणों के बिना स्त्री शोभा नहीं पाती, उसी प्रकार अलंकार-बिना गीत भी शोभा को प्राप्त नहीं होते ।

अलंकार को 'पलटा' भी कहते हैं। गायन सीखने से पहले विद्यार्थियों को अलंकार सिखाए जाते हैं, क्योंकि इसके बिना न तो अच्छा स्वर-ज्ञान ही होता है और न उन्हें आगे संगीत-कला में सफलता ही मिलती है। अलंकारों से राग-विस्तार में भी काफी सहायता मिलती है। अलंकारों के द्वारा राग की सजावट करके उसमें चार चाँद लगाए जा सकते हैं। तानें इत्यादि भी अलंकारों के आधार पर ही बनती हैं, जैसे 'सारे गरे गम ग म पऽ। रेग रे ग म प धऽ' इत्यादि। अलंकार वर्ण-समुदायों में ही होते हैं। उदाहरण के लिए वर्ण-समुदाय 'सा रे ग सा'।

इसमें आरोही-अवरोही, दोनों वर्ण आ गए हैं। इसे एक सीढ़ी मान सकते हैं। अब इसी आधार पर आगे बढ़ते हैं और पिछला स्वर छोड़कर आगे का स्वर बढ़ाते जाते हैं, रे ग म रे यह दूसरी सीढ़ी है; गमपग यह तीसरी सीढ़ी है। इसी प्रकार बहुत-से अलंकार तैयार किए जा सकते हैं। शुद्ध स्वरों के अलावा कोमल तीव्र स्वरों के अलंकार भी तैयार किए जा सकते हैं, किन्तु उनमें यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि जिस राग में जो स्वर लगते हैं, वे ही स्वर उस राग के अलंकारों में लगाएं जाएँ।

1.3.4 भैरव राग के अलंकार

1. **आरोह-**

सा रे ग म प ध नि सां

दा रा दा रा दा रा दा रा

अवरोह-

सां नि ध प म ग रे सा

दा रा दा रा दा रा दा रा

2. **आरोह-**

सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नि नि, सां सां

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे सा सा

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

3. **आरोह-**

सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

दा रा दा दारादा दा रा दा दा रा दा दा रा दा दा रा दा दा रा दा दा रा दा

अवरोह-

सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, म म म, ग ग ग, रे रे रे सा सा सा

दा रा दा दारादा दा रा दा दा रा दा दा रा दा दा रा दा दा रा दा दा रा दा

4. **आरोह-**

सा रे सा, रे ग रे ग म ग, म प म, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रे सां

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह-

सां रे सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म प म, ग म ग, रे ग रे सा रे सा

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

5. **आरोह-**

सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सां

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह-

सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे ग रे सा

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

6. **आरोह-**

सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सां

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

7. **आरोह-**

सा रे ग म प, रे ग म प ध, ग म प ध नि, म प ध नि सां

दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा

अवरोह-

सां नि ध प म, नि ध प म ग, ध प म ग रे प म ग रे सा

दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा

8. **आरोह-**

सा ग रे॒ रे॒ म ग, ग प म, म ध॒ प, प नि ध॒ ध॒ सां नि, नि रे॒ सां

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह-

नि रे॒ सां, ध॒ सां नि, प नि ध॒, म ध॒ प, ग प म, रे॒ म ग, सा ग रे॒

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

9. **आरोह-**

सा रे॒ ग सा, रे॒ ग म रे॒ ग म प ग, म प ध॒ म, प ध॒ नि प,

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

ध॒ नि सां ध॒, नि सां रें॒ नि, सां रें॒ गं सां

दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां रें॒ गं सां, नि सां रें॒ नि, ध॒ नि सां ध॒, प ध॒ नि प,

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

म प ध॒ म, ग म प ग, रे॒ ग म रे॒, सा रे॒ ग सा

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

10. **आरोह-**

सा ग रे॒ सा, रे॒ म ग रे॒, ग प म ग, म ध॒ प म, प नि ध॒ प,

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

ध॒ सां नि ध॒, नि रें॒ सां नि, सां गं रें॒ सां

दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, म ध प म,

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

ग प म ग, रे म ग रे, सा ग रे सा

दारादारा दारादारा दारादारा

11. **आरोह-**

सा ग म रे सा, रे म प ग रे, ग प ध म ग,

दारादारादा दारादारादा दारादारादा

म ध नि प म, प नि सां ध प, ध सां रें नि ध,

दारादारादा दारादारादा दारादारादा

नि रें गं सां नि, सां गं मं रें सां

दारादारादा दारादारादा

अवरोह-

सां गं मं रें सां, नि रें गं सां नि, ध सां रें नि ध,

दारादारादा दारादारादा दारादारादा

प नि सां ध प, म ध नि प म, ग प ध म ग,

दारादारादा दारादारादा दारादारादा

रे म प ग रे, सा ग म रे सा

दारादारादा दारादारादा

12. **आरोह-**

सा ग, रे म, ग प, म ध, प नि, ध सां

दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां ध, नि प, ध म, प ग, म रे, ग सा

दारा दारा दारा दारा दारा दारा

13. **आरोह-**

सा म, रे प, ग ध, म नि, प सां

दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां प, नि म, ध ग, प रे, म सा

दारा दारा दारा दारा दारा

14. **आरोह-**

सा प, रे ध, ग नि, प सां

दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां प, नि ग, ध रे, प सा

दारा दारा दारा दारा

15. **आरोह-**

सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध,

दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा

प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

दारादारादा दारादारादा

अवरोह-

सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म, प म प म ग,

दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा

म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

दारादारादा दारादारादा

16. **आरोह-**

सा रे ग सा रे ग म, रे ग म रे ग म प, ग म प ग म प ध,

दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा

म प ध म प ध नि, प ध नि प ध नि सां

दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा

अवरोह-

सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प म, ध प म ध प म ग,

दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा

प म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे सा

दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा

17. **आरोह-**

सा रे, रे ग, ग म, म प, प ध, ध नि, नि सां

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां नि, नि ध, ध प, प म, म ग, ग रे, रे सा

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

18. **आरोह-**

सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग म ग रे, ग म ग ग म प म ग,

दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा

म प म म प ध प म, प ध प प ध नि ध प, ध नि ध ध नि सां नि ध,

दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा

नि सां नि नि सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा

अवरोह-

सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नि नि सां रें सां नि, ध नि ध ध नि सां नि ध,

दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा

प ध प प ध नि ध प, म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग,

दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा

रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

दारादा,दारादा,दारा दारादा,दारादा,दारा

19. **आरोह-**

सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे म, ग म ग म ग प, म प म प म ध,

दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा

प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

दारादारादारा दारादारादारा

अवरोह-

सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध म, प म प म प ग,

दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा

म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

दारादारादारा दारादारादारा

20. **आरोह-**

सा रे रे ग, रे ग ग म, ग म म प, म प प ध,

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

प ध ध नि, ध नि नि सां

दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प म, प म म ग,

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

म ग ग रे, ग रे रे सा

दारादारा दारादारा

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 जब स्वरों का आरोह या अवरोह नियमानुसार किया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) तोड़ा

घ) लय

1.2 वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) लय

घ) संगीत

1.3 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म प प प, ध ध ध,

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

1.4 गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

1.5 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

1.6 रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

1.7 गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

1.4 सारांश

भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया

जाता है। यह अलंकार अलग-अलग छंदों में होते हैं जो विलंबित लय में, मध्य लय में तथा द्रुत लय में बजाए जाते हैं। इन्हीं अलंकारों से, राग के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों तथा तानों का निर्माण किया जाता है।

1.5 शब्दावली

- अलंकार: साधारण शब्दों में जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है।
- लय: वादन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहते हैं।
- गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहते हैं।
- विलंबित लय: वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: ख)
1.2 उत्तर: ग)
1.3 उत्तर: ख)
1.4 उत्तर: ख)
1.5 उत्तर: ख)
1.6 उत्तर: ग)
1.7 उत्तर: क)

1.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भैरव का आरोह तथा अवरोह लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 4. अलंकार क्या होते हैं।

प्रश्न 5. आरोह तथा अवरोह से आप क्या समझते हैं, लिखिए।

इकाई-2
यमन राग का परिचय तथा अलंकार
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	यमन राग का परिचय तथा अलंकार (वादन के संदर्भ में)
2.3.1	यमन राग का परिचय
2.3.2	आरोह, अवरोह, पकड़
2.3.3	अलंकार
2.3.4	यमन राग के अलंकार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA3082PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में वादन संदर्भ में, यमन राग का परिचय, आरोह, अवरोह, पकड़ तथा उसके अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है। इसे पलटा भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा इन्हीं अलंकारों मे माध्यम से अन्य अलंकारों की रचना करने में सहायता मिलती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी यमन राग के स्वरूप के साथ-साथ उनमें बजाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक अलंकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से यमन राग के , आरोह, अवरोह, पकड़ तथा अलंकारों को सितार वाद्य पर बजा सकेंगें।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के अलंकारों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, यमन राग के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, यमन राग के अलंकारों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, यमन राग के अलंकारों को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, वादन के अंतर्गत, यमन राग में अलंकारों के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 यमन राग का परिचय तथा अलंकार (वादन के संदर्भ में)

2.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (म॑)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩी रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩी ध़ ऩी रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है।

इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

2.3.2 आरोह, अवरोह, पकड़

आरोह-अवरोह

आरोह का अर्थ है ऊपर चढ़ना तथा अवरोह का अर्थ है नीचे उतरना। संगीत में आरोह-अवरोह का अर्थ है: जब नाद के आधार पर, नीचे से ऊपर अर्थात किसी स्वर से उपर के स्वर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते हैं और इसके ठीक विपरीत नाद के आधार पर, ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है। गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहा जाता है।

गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहा जाता है। आरोह तथा अवरोह राग के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाले वे पारिभाषिक शब्द हैं जो अधिकांशतः साथ-साथ प्रयुक्त होते हैं। आधुनिक राग लक्षणों में आरोह-अवरोह भी एक लक्षण है, उदाहरण के लिए

सा रे ग म॑ प ध नि सां आरोही क्रम है और

सां नि ध प म॑ ग रे सा अवरोही क्रम है।

आधुनिक राग लक्षण के अन्तर्गत आरोह-अवरोह का महत्व इसलिए भी अधिक है कि इनके द्वारा राग में स्वरों का प्रयोग किस क्रम में हुआ है कि निश्चित जानकारी प्राप्त होती है, क्योंकि आरोह-अवरोह का निर्माण उस राग के वर्जित स्वरों को छोड़कर एवं शेष स्वरों के प्रयोग द्वारा होता है जिससे इनके द्वारा स्वरों का प्रयोग किस क्रम में होगा, स्पष्ट होता है, साथ ही साथ आरोह-अवरोह राग की जाति के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यदि आरोह-अवरोह में सात-सात स्वर लगते हों तो सम्पूर्ण जाति यदि छः-छः लगते हों तो षाडव और यदि पांच-पांच स्वर लगते हों तो औडव जाति कहा जाता है। इसी प्रकार से यह अन्य जाति व उपजातियों के निर्धारण में सहायक सिद्ध होते हैं। नाद के आधार पर किसी स्वर से उपर के स्वर पर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते है और ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है।

पकड़

'पकड़ शब्द बोलचाल की भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ-पकड़ना, काबू करना व नियन्त्रित करना से लिया जाता है। 'पकड़ शब्द का यही अर्थ संगीत में यथावत ग्रहण किया गया है जिसका अर्थ है राग का वह छोटा सा समुदाय जिससे राग को पहचाना जा सके, उसे पकड़ कहते हैं। रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को पकड़ कहते हैं।

प्रत्येक राग में एक ऐसा स्वर समूह या समुदाय होता है जिसे गाने या बजाने से उसे राग का स्वरूप स्पष्ट तथा व्यक्त होता है। इसी विशिष्ट स्वर समुदाय को उस राग की पकड़ कहा जाता है जैसे राग यमन की पकड़ ऩी रे ग, ऩी रे सा, प म॑ ग रे, ऩी रे सा है। इस छोटे से स्वर समुदाय को गाते या बजाते ही राग यमन का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है अर्थात इस पकड़ को गाते या बजाते ही श्रोताओं को राग यमन का स्पष्ट बोध हो जाएगाता है।

2.3.3 अलंकार

प्राचीन ग्रंथकार 'अलंकार' की परिभाषा इस प्रकार करते हैं:-

विशिष्ट वर्ण संदर्भलंकार प्रचक्षते।।

अर्थात् -कुछ नियमित वर्ण-समुदायों को 'अलंकार' कहते हैं। 'अलंकार' का अर्थ है 'आभूषण' या 'गहना। जिस प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकारों के द्वारा गायन की शोभा बढ़ जाती है। 'अभिनव रागमंजरी' में लिखा है :-

शशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।

अविभूषिते कांता गीतिरलंकारहीना स्यात् ।।

अर्थात् - जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि, जल के बिना नदी, फूलों के बिना लता तथा आभूषणों के बिना स्त्री शोभा नहीं पाती, उसी प्रकार अलंकार-बिना गीत भी शोभा को प्राप्त नहीं होते ।

अलंकार को 'पलटा' भी कहते हैं। गायन सीखने से पहले विद्यार्थियों को अलंकार सिखाए जाते हैं, क्योंकि इसके बिना न तो अच्छा स्वर-ज्ञान ही होता है और न उन्हें आगे संगीत-कला में सफलता ही मिलती है। अलंकारों से राग-विस्तार में भी काफी सहायता मिलती है। अलंकारों के द्वारा राग की सजावट करके उसमें चार चाँद लगाए जा सकते हैं। तानें इत्यादि भी अलंकारों के आधार पर ही बनती हैं, जैसे 'सारे गरे गमं ग मं पऽ। रेग रे ग मं प धऽ' इत्यादि। अलंकार वर्ण-समुदायों में ही होते हैं। उदाहरण के लिए वर्ण-समुदाय 'सा रे ग सा'। इसमें आरोही-अवरोही, दोनों वर्ण आ गए हैं। इसे एक सीढ़ी मान सकते हैं। अब इसी आधार पर आगे बढ़ते हैं और पिछला स्वर छोड़कर आगे का स्वर बढ़ाते जाते हैं, रे ग म रे यह दूसरी सीढ़ी है; गमपग यह तीसरी सीढ़ी है। इसी प्रकार बहुत-से अलंकार तैयार किए जा सकते हैं। शुद्ध स्वरों के अलावा कोमल तीव्र स्वरों के अलंकार भी तैयार किए जा सकते हैं, किन्तु उनमें यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि जिस राग में जो स्वर लगते हैं, वे ही स्वर उस राग के अलंकारों में लगाएं जाएँ।

2.3.4 यमन राग के अलंकार

1 आरोह-

सा रे ग मं प ध नि सां

दा रा दा रा दा रा दा रा

अवरोह-

सां नि ध प मं ग रे सा

दा रा दा रा दा रा दा रा

2 आरोह-

सा सा, रे रे, ग ग, मं मं, प प, ध ध, नि नि, सां सां

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां सां, नि नि, ध ध, प प, मं मं, ग ग, रे रे, सा सा

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

3 आरोह-

सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, मं मं मं, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह-

सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, मं मं मं, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

4 आरोह-

सा रे सा, रे ग रे, ग मं ग, मं प मं, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह-

सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, मं प मं, ग मं ग, रे ग रे, सा रे सा

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

5 आरोह-

सा रे ग, रे ग म', ग म' प, म' प ध, प ध नि, ध नि सां

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह-

सां नि ध, नि ध प, ध प म', प म' ग, म' ग रे, ग रे सा

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

6 आरोह-

सा रे ग म', रे ग म' प, ग म' प ध, म' प ध नि, प ध नि सां

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां नि ध प, नि ध प म', ध प म' ग, प म' ग रे, म' ग रे सा

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

7 आरोह-

सा रे ग म' प, रे ग म' प ध, ग म' प ध नि, म' प ध नि सां

दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा

अवरोह-

सां नि ध प म', नि ध प म' ग, ध प म' ग रे, प म' ग रे सा

दारादारादा दारादारादा दारादारादा दारादारादा

8 आरोह-

सा ग रे, रे म' ग, ग प म', म' ध प, प नि ध, ध सां नि, नि रें सां

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

अवरोह-

नि रे सां, ध सां नि, प नि ध, म॑ ध प, ग प म॑, रे म॑ ग, सा ग रे

दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा दारादा

9 आरोह-

सा रे ग सा, रे ग म॑ रे, ग म॑ प ग, म॑ प ध म॑, प ध नि प, ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प, म॑ प ध म॑, ग म॑ प ग, रे ग म॑ रे, सा रे ग सा

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

10 आरोह-

सा ग रे सा, रे म॑ ग रे, ग प म॑ ग, म॑ ध प म॑, प नि ध प, ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, म॑ ध प म॑, ग प म॑ ग, रे म॑ ग रे, सा ग रे सा

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

11 आरोह-

सा ग म॑ रे सा, रे म॑ प ग रे, ग प ध म॑ ग, म॑ ध नि प म॑,

दारादादारा दारादादारा दारादादारा दारादादारा

प नि सां ध प, ध सां रें नि ध, नि रें गं सां नि, सां गं मं रें सां

दारादादारा दारादादारा दारादादारा दारादादारा

अवरोह-

सां गं मं रें सां,	नि रें गं सां नि,	ध सां रें नि ध,	प नि सां ध प,
दारादादारा	दारादादारा	दारादादारा	दारादादारा
मं ध नि प मं,	ग प ध मं ग,	रे मं प ग रे,	सा ग मं रे सा
दारादादारा	दारादादारा	दारादादारा	दारादादारा

12 आरोह-

सा ग, रे मं, ग प, मं ध, प नि, ध सां

दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां ध, नि प, ध मं, प ग, मं रे, ग सा

दारा दारा दारा दारा दारा दारा

13 आरोह-

सा मं, रे प, ग ध, मं नि, प सां

दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां प, नि मं, ध ग, प रे, मं सा

दारा दारा दारा दारा दारा

14 आरोह-

सा प, रे ध, ग नि, प सां

दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां प, नि ग, ध रे, प सा

दारा दारा दारा दारा

15 आरोह-

सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म', ग म' ग म' प, म' प म' प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा

अवरोह-

सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म', प म' प म' ग, म' ग म' ग रे, ग रे ग रे सा

दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा दारा,दारादा

16 आरोह-

सा रे ग सा रे ग म', रे ग म' रे ग म' प, ग म' प ग म' प ध, म' प ध म' प ध नि, प ध नि प ध नि सां

दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा

अवरोह-

सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प म', ध प म' ध प म' ग, प म' ग प म' ग रे, म' ग रे म' ग रे सा

दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा दारादा,दारादारा

17 आरोह-

सा रे, रे ग, ग म', म' प, प ध, ध नि, नि सां

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

अवरोह-

सां नि, नि ध, ध प, प म', म' ग, ग रे, रे सा

दारा दारा दारा दारा दारा दारा दारा

18 आरोह-

सा रे सा सा रे ग रे सा,	रे ग रे रे ग म॑ ग रे,	ग म॑ ग ग म॑ प म॑ ग,
दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा
म॑ प म॑ म॑ प ध प म॑,	प ध प प ध नि ध प,	ध नि ध ध नि सां नि ध,
दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा
नि सां नि नि सां रें सां नि,	सां रें सां सां रें गं रें सां	
दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा	

अवरोह-

सां रें सां सां रें गं रें सां,	नि सां नि नि सां रें सां नि,	ध नि ध ध नि सां नि ध,
दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा
प ध प प ध नि ध प,	म॑ प म॑ म॑ प ध प म॑,	ग म॑ ग ग म॑ प म॑ ग,
दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा
रे ग रे रे ग म॑ ग रे,	सा रे सा सा रे ग रे सा	
दारादा,दारादा,दारा	दारादा,दारादा,दारा	

19 आरोह-

सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे म॑, ग म॑ ग म॑ ग प, म॑ प म॑ प म॑ ध, प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा

अवरोह-

सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध म॑, प म॑ प म॑ प ग, म॑ ग म॑ ग म॑ रे, ग रे ग रे ग सा

दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा दारादारादारा

20 आरोह-

सा रे रे ग, रे ग ग म', ग म' म' प, म' प प ध, प ध ध नि, ध नि नि सां

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

अवरोह-

सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प म', प म' म' ग, म' ग ग रे, ग रे रे सा

दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा दारादारा

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 जब स्वरों का आरोह या अवरोह नियमानुसार किया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) तोड़ा

घ) लय

2.2 वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) लय

घ) संगीत

2.3 निम्न में से कौन सा अलंकार यमन राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म' म' म' प प प, ध ध ध,

ख) रे रे रे, ग ग ग, म' म' म', प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, नि नि नि,

2.4 गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

2.5 निम्न में से कौन सा अलंकार यमन राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म॑ म॑, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

2.6 रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

2.7 गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

2.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यह अलंकार अलग-अलग छंदों में होते हैं जो विलंबित लय में, मध्य लय में तथा द्रुत लय में बजाए जाते हैं। इन्हीं अलंकारों से, राग के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों तथा तानों का निर्माण किया जाता है।

2.5 शब्दावली

- अलंकार: साधारण शब्दों में जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है।

- लय: वादन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहते हैं।
- गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहते हैं।
- विलंबित लय: वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: ख)

2.2 उत्तर: ग)

2.3 उत्तर: ख)

2.4 उत्तर: ख)

2.5 उत्तर: ख)

2.6 उत्तर: ग)

2.7 उत्तर: क)

2.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

2.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग यमन का आरोह तथा अवरोह लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 4. अलंकार क्या होते हैं।

प्रश्न 5. आरोह तथा अवरोह से आप क्या समझते हैं, लिखिए।

इकाई-3
मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक (सितार वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	मिजराब तथा उसके बोल (सितार वादन के संदर्भ में)
3.3.1	मिजराब तथा उसकी धारण विधि
3.3.2	मिज़राब के आघात द्वारा उत्पादित बोल
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य का प्रयोग विशेष रूप से होता है। सितार वाद्य को अंगुली में मिजराब पहनकर बजाया जाता है। मिजराब पहनकर बजाने से आवाज जोर से आती है तथा अंगुली भी ठीक रहती है। इसी के प्रयोग से अलग अलग बोलों का निर्माण होता है। जिसके कारण राग/ सांगीतिक प्रस्तुति सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय तथा आनंददायक बन जाती है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य को सीखने के लिए मिजराब के बोलों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इससे हाथ की तैयारी के साथ-साथ लय बढती जाती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से सितार वाद्य पर बजा सकेगें।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक की जानकारी प्रदान करना।
- सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों द्वारा अपनी कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में वादन के अंतर्गत विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

3.3 मिजराब तथा उसके बोल (सितार वादन के संदर्भ में)

3.3.1 मिजराब तथा उसकी धारण विधि

सितार के तार पर आघात कर स्वरोत्पति की प्रक्रिया मिजराब द्वारा सम्पन्न होती है। मिजराब धारण करना व मिजराब के आकार आदि की सितार वादन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। लोहे की त्रिकोणाकार वस्तु, जिसे दायें हाथ की तर्जनी में धारण कर, सितार के तार पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है, मिजराब कहलाती है। मिजराब एक कोण की तरह बना हुआ होता है, जिसके ऊपर दो तारें इस तरह से कोण से बंधी हुई होती है कि वह एक पंख की शक्ल ग्रहण कर लेता है।

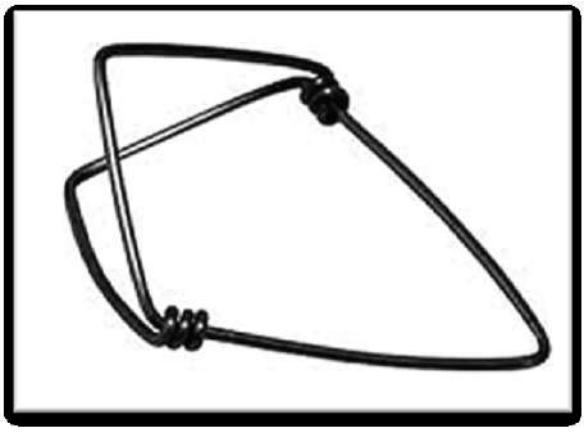

मिजराब को दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली पर पर इस प्रकार धारण करना चाहिए कि मिजराब के ऊपरी भाग यानि पंखों या चिमटी के बीच से दाहिने हाथ की तर्जनी उँगली को गुजारना होगा। मिजराब का जोड़ एक नाखून के ऊपर तथा दूसरा नीचे की तरफ होना चाहिए।

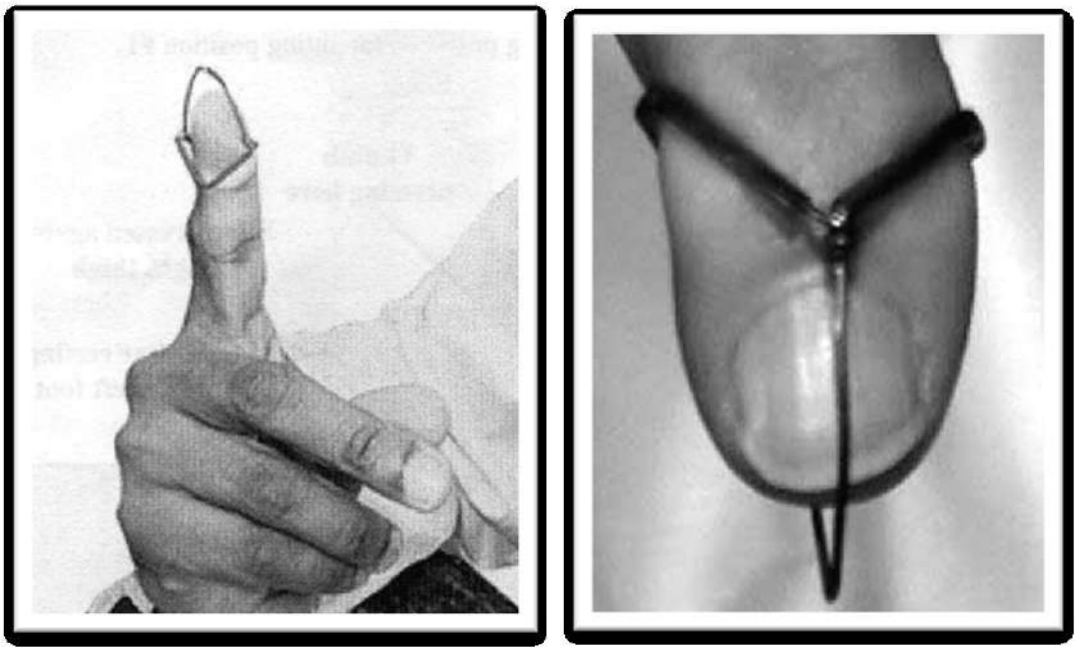

अंगुली पर मिजराब की स्थिति

मिजराब का लम्बा सिरा तार पर आघात करने के लिए बाहर की ओर निकला रहे तथा टोकरीनुमा भाग तर्जनी उँगली के अगले भाग को चिमटे की तरह दबाए रखे। मिजराब धारण करते समय इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिए कि पंख या चिमटी तर्जनी उंगली के प्रथम जोड़ तक ही रहे। जोड़ से न आगे जाएँ और न ही पीछे, अन्यथा उंगली के द्रुत संचालन में रुकावट पड़ेगी। आजकल एक मिज़राब से ही सितार वादन किया जाता है, किन्तु पुरानी पीढ़ी के कलाकार तर्जनी तथा मध्यमा उंगली में दो मिजराब पहन कर वादन करते थे।

3.3.2 मिज़राब के आघात द्वारा उत्पादित बोल

तन्त्री वाद्यों पर विभिन्न प्रकार के प्रहारों को संगीत की भाषा में 'बोल' कहते है। मिजराब की सहायता से सितार वादक दो तरह के आघात करते हैं आकर्ष प्रहार और अपकर्ष प्रहार।

सितार पर मिजराब द्वारा आघात करने से 'दा' और 'रा' दो बोल निकलते हैं। मूलरूप से इन बोलों को 'दे' और 'रु' के नाम से भी जाना जाता है। पहले, इन दोनों बोलों को 'दा' की अपेक्षा 'डा' और रा की अपेक्षा 'ड़ा' कहा जाता था।

श्री एस.एस. टैगोर के अनुसार, दा या डा को 'डा', 'डे' या 'डी' बोल कहते हैं तथा रा या डा़ को 'रा', 'रे', 'री' भी कहते हैं। उपरोक्त डा, डे, डी तीनों बोल एक ही कार्य को तथा रा, रे री बोल भी एक ही प्रणाली को दर्शाते हैं।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा'

मिज़राब युक्त तर्जनी उंगली से जब तार पर बाहर से अन्दर की ओर अर्थात अपनी ओर प्रहार करने पर जो ध्वनि या बोल बनता है, उसे 'दा' का बोल कहते है। इसे 'आकर्ष प्रहार' कहा जाता है।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की पहली स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की दूसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की तीसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा'

मिज़राब युक्त तर्जनी उंगली से जब तार पर अन्दर से बाहर की ओर अर्थात् अपने से विपरीत दिशा में प्रहार करने पर जिस बोल की उत्पत्ति होती है उसे 'रा' कहते है। इसे 'अपकर्ष प्रहार' भी कहा जाता है।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की पहली स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की दूसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की तीसरी स्थिति

इस 'रा' के उल्टे प्रहार में हमें कभी-कभी बाज की तार के साथ जोड़े की तार की ध्वनि भी सुनाई पड़ती। अतः मुख्य रूप से यह दो बोल 'दा' और 'रा' एक-एक मात्रिक काल में बजते हैं।

विद्वानों द्वारा उपरोक्त 'दा' तथा 'रा' के बोलों को विलम्बित लय में 'डा', 'रा', मध्यलय में 'डे', 'रे' तथा द्रुतलय में 'डी', 'री' कहा गया है।

इन दोनों बोलों के सहयोग से अन्य कई प्रकार के बोल बनाए जा सकते हैं जो कि क्रमशः एक मात्रा, डेढ़ मात्रा, एक चैथाई मात्रा काल में बनाए जाते हैं, जिन्हें 'दारा' अथवा 'दिर', 'द्रा', दाऽरा, द्राऽऽर, दाऽऽर के नाम से जाना जाता है।

'दा रा' अथवा 'दिर'

'दा' और 'रा' को प्रायः लगभग एक-एक मात्रा काल का बोल माना गया है। 'दा' और 'रा' के बोल को द्रुत लय में न बजा कर केवल मध्य लय में एक मात्रा काल में ही मिज़राब द्वारा आघात करने से 'दारा' का बोल बनता है और इसी प्रकार यदि 'दारा' को द्रुत लय में जल्दी से अर्थात एक मात्रा काल में दोनों बोलों को एक साथ बजाने से 'दिर' बोल बन जाता है। आज की अपेक्षा 'दिर' बोल को पहले 'डिड़', 'दिड़' तथा 'डिरी' भी कहा जाता था। जिसका प्रयोग दो स्वरों या एक ही स्वर को दो बार बजाने के लिए किया जाता था।

दाऽरा

जब 'दा' प्रहार को एक मात्रा में बजाएँ तथा उसे साथ ही 'रा' के बोल को केवल आधी मात्रा में बजाएँ तो मिजराब द्वारा 'दाऽरा' के बोल की उत्पत्ति होगी। सामान्यतया इस डेढ़ मात्रिक बोल को दो बार प्रयुक्त किया जाता है। दो बार बजाने से इस का मात्रा काल तीन मात्रा का हो जाता है जैसे 'दाऽर दाऽर' अर्थात मिजराब के चार बोलों को तीन मात्रा काल में रखा जाता है। इस प्रकार के बोल प्रायः रजाखानी गत अर्थात द्रुत गत की बंदिशों में, तोड़ों में प्रयुक्त किया जाता है।

'द्रा'

जब 'दा' और 'रा' के बोलों को चैथाई मात्रा में बजाएँ तो मिजराब के इस प्रकार आघात करने से 'द्रा' बोल की उत्पति होती है। इस बोल को सफाई या सुन्दरता से निकालने के लिए काफी अभ्यास की आवश्यकता होती है। कुछ लोग 'द्रा' बजाने के लिए तर्जनी व मध्यमा दोनों में मिजराब पहन कर बाज के तार पर इस प्रकार प्रहार करते हैं कि पहले मध्यमा उंगली की मिजराब बाज पर पड़े और तुरन्त ही तर्जनी की भी मिजराब बाज पर पड़े तब 'द्रा' बोल का बोध होता है।

उपरोक्त मिजराब के बोलों से ही अन्य कई प्रकार के बोलों तथा छन्दों की रचना की जाती है। जैसे द्रे, द्रा ऽर, डेरा ऽर, ददाऽर इत्यादि मिश्रित बोल बन सकते हैं जो कि विभिन्न प्रकार की लयकारियों में दर्शाए जा सकते हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 सितार बजाने के लिए अंगुली पर जिस चीज को धारण किया जाता है उसे क्या कहते हैं?

क) जवा

ख) सितार

ग) तोड़ा

घ) मिजराब

3.2 सितार वादन में मिजराब को किस अंगुली पर पहनते हैं?

क) दाएं हाथ की तर्जनी

ख) बाएं हाथ की तर्जनी

ग) दाएं हाथ की मध्यमा

घ) दाएं हाथ की कनिष्का

3.3 तार पर बाहर से अन्दर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे क्या कहते है?

क) रा

ख) दा

ग) दिर

घ) द्रा

3.4 तार पर अंदर से बाहर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे क्या कहते है?

क) रा

ख) दा

ग) दिर

घ) द्रा

3.5 दा तथा रा दोनों बोलों को जब एक मात्रा में बजाते हैं तो कौन सा बोल बनता है?

क) रा

ख) दा

ग) दिर

घ) द्रा

3.4 सारांश

सितार वाद्य को अंगुली में मिजराब पहनकर बजाया जाता है। मिजराब की सहायता से विभिन्न बोलों का निर्माण होता है - दा, रा, दिर, द्रा ऽर, दाऽर आदि। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य को सीखने के लिए मिजराब के बोलों को का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इससे हाथ की तैयारी के साथ-साथ लय बढती जाती है। इन्हीं की सहायता से अलग-अलग छंदों का वादन होता है तथा रागों के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों का वादन किया जाता है।

3.5 शब्दावली

- मिजराब: लोहे की त्रिकोणाकार वस्तु, जिसे दायें हाथ की तर्जनी में धारण कर, सितार के तार पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है।
- दा का बोल: तार पर बाहर से अन्दर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे 'दा'कहते हैं।
- रा का बोल: तार पर अन्दर से बाहर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे 'रा'कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: घ)

3.2 उत्तर: क)

3.3 उत्तर: ख)

3.4 उत्तर: क)

3.5 उत्तर: ग)

3.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

3.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. सितार में मिजराब के बोलों के विषय में लिखिए।

प्रश्न 2. सितार वाद्य में मिजराब को पहनने की विधि को लिखिए।

इकाई-4
भैरव राग की रजाखानी/द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	राग भैरव
4.3.1	भैरव राग का परिचय
4.3.2	भैरव राग का आलाप
4.3.3	भैरव राग की द्रुत गत
4.3.4	भैरव राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	सारांश
4.5	शब्दावली
4.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7	संदर्भ
4.8	अनुशंसित पठन
4.9	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग भैरव का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरव का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरव राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 राग भैरव

4.3.1 भैरव राग का परिचय

राग- भैरव

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - ऋषभ, धैवत (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ऩी सा ग म ध ध प, ग म रे रे सा

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी धैवत तथा संवादी रिषभ है। भैरव राग का समय दिन का प्रथम प्रहर माना गया है।

भैरव राग में रिषभ को लगाने का अलग तरीका है। अगर हमने आरोह करते समय षड्ज से ऋषभ, गंधार, मध्यम तक जाना हो तो हम रिषभ का प्रयोग करते हैं, जैसे- सा रे, सा रे ग सा रे ग म। परन्तु यदि हमने पंचम का प्रयोग करना हो तो हम रिषभ का लंघन करते हैं, जैसे- सा रे ग म, सा ग म प अर्थात् उत्तरांग की तरफ जाते समय (पंचम या उससे आगे) हम रिषभ का लंघन करते हैं। अवरोह करते समय रिषभ पर आंदोलन किया जाता है। यह आंदोलन दो, तीन बार तक किया जाता है। इसी प्रकार धैवत पर भी आंदोलन होता है। धैवत पर आंदोलन आरोह तथा अवरोह दोनों तरफ होता है जबकि रिषभ में केवल अवरोह के समय ही आंदोलन किया जाता है; जैसे- ग म ग रे रे ऽ रे ऽ ग म नि ध ऽ ध ऽ प।

यह एक स्वतंत्र राग है। इसमें किसी अन्य राग की छाया नहीं आती है। कई अन्य रागों में भैरव अंग जोड़कर अन्य रागों की रचना की गई है, जैसे- भैरव बहार, अहीर भैरव आदि। भैरव का समप्रकृतिक राग कलिंगड़ा है। भैरव राग जहाँ गंभीर प्रकृति का राग है वहीं कलिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर न्यास किया जाता है वहीं कलिंगड़ा में गंधार तथा पंचम पर न्यास होता है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर आंदोलन अधिक रहता है। यह आंदोलन ही भैरव का मुख्य अंग है परन्तु कलिंगड़ा राग में इस प्रकार का आंदोलन बहुत कम रहता है।

4.3.2 भैरव राग का आलाप

- सा रे रे सा, सा ध, नि नि ध, नि ध प, प
  ध नि सा रे रे सा।
- नि सा ग म रे सा, ध नि नि रे सां, ध नि ध प,
  प म ग प, ग म प ग म रे रे सा।
- ग म प ध प, नि सा ग म रे नि सा ग म ध प,
  म प ध प, ग म रे रे सा।

- ग म प ध̲, ध̲ ध̲ सां ध̲ नि ध प, ध̲ नि सां रें̲ सां,

  सां नि ध̲ ध̲ नि ध̲ प, ध̲ प म ग म ध̲ प ग म रे̲,

  रे̲ सां नि ध̲ नि सां रे सां, सां नि ध̲ प म ग रे̲ सा

- ग म ध̲ – नि- नि सां, सां रें̲, सां गं मं रें̲ रें̲ सां रें̲ सां

  नि ध̲ ध̲ प, ध प म ग म ध̲ प, ग म रें̲ रें̲ सां

  नि ध̲ ध̲ प ध̲ प म ग म ध̲ प ग म रे̲ - रे̲ – सा।

4.3.3 भैरव राग की द्रुत गत

राग: भैरव **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई:															
								सां	ध̲ध̲	प	ध̲	म	पप	ग	म
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	-	ध̲	प	म	गग	रे̲	सा								
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध̲	ऩीऩी	सा	रे̲	ग	मम	रे̲	सा
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ग	मम	ध̲	प	ग-	गरे̲	-रे̲	सा								
दा	दिर	दा	रा	दा-	रदा	-र	सा-								

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा:															
								ग दा	मम दिर	ध दा	नी रा	म दा	धध दिर	नी दा	नी रा
सां दा	- -	सां दा	सां रा	गं दा	मंमं दिर	रें दा	सां रा								
								सां दा	रेंरें दिर	नी दा	सां रा	ध दा	*नीनी* दिर	प दा	*ध* रा
म दा	पप दिर	गग दा	मम रा	ग- दा-	गरे रदा	-रे -र	सा सा-								

4.3.4 भैरव राग के तोड़े

सम से सम तक:-

- सांनि धप मग रेसा निसा गम रेसा निसा सांनि सांनि धप

  म- निध निध पम गरे

- सांनि सांनि धप निध निध पम गरे निसा सारे गग

  रेग मम गम पप गम रेसा

- सारे गग रेग मम गम पप मप धध पध निनि धनि सांसां

  निध पम गम रेसा

सम से खाली तक:-

- ऩिसा गम धध पम गम पम गरे ऩिसा पम गम

  धध पम पम गम रेसा ऩिसा

सम से सम तक:-

- निसां गंमं गरें सांनि धनि सारें सांनि धप मप धनि

  धप मप गम रेरे सासा ऩिसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 भैरव राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

4.2 भैरव राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

4.3 भैरव राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

4.4 भैरव राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) धैवत

घ) कोई भी नहीं

4.5 भैरव राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) म

ग) ध

घ) कोई भी नहीं

4.6 भैरव राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

4.7 भैरव राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध प, म ग म रे सा

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

4.8 भैरव राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

4.9 भैरव राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही बजाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

4.10 भैरव राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

4.4 सारांश

भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरव राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत, मध्य तथा तेज लय में बजाई जाती है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

4.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: ग)

4.2 उत्तर: घ)

4.3 उत्तर: क)

4.4 उत्तर: ग)

4.5 उत्तर: घ)

4.6 उत्तर: ग)

4.7 उत्तर: क)

4.8 उत्तर: ग)

4.9 उत्तर: ख)

4.10 उत्तर: ख)

4.7 संदर्भ

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

4.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरव का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरव का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरव की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-5
यमन राग की रजाखानी/द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	राग यमन
5.3.1	यमन राग का परिचय
5.3.2	यमन राग का आलाप
5.3.3	यमन राग की द्रुत गत 1
5.3.4	यमन राग की द्रुत गत 2
5.3.5	यमन राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	सारांश
5.5	शब्दावली
5.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.7	संदर्भ
5.8	अनुशंसित पठन
5.9	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग यमन का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 राग यमन

5.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (म॑)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है। इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

5.3.2 यमन राग का आलाप

1 सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

2 सा ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म॑ ध़ प़, म॑ ध़ ऩी रे सा सा।

3 ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा, म॑ ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

4 ऩी रे, ग म॑ म॑ प, प, म॑ ग, रे ग म॑, म॑ ग रे सा

5 ग म॑ प, प, म॑ ध प, प, म॑ ध नी नी ध प, प, म॑ ध नी नी रें सां, सां

6 नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां, नी रें, गं मं गं, रें गं, गं रें सां

7 रें नी ध प, प, म॑ ध प म॑ ग, रे म॑ ग रे ऩी रे सा

5.3.3 यमन राग की द्रुत गत 1

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
						ऩि	ध़	ऩि	रेरे	ग	रे	ऩि	रे	सा	ऽ
						दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
ऩि	ध़	ऽ	ऩि	सा	ऽ										
दा	रा	ऽ	दा	रा	ऽ										
						सा	ऩि	सा	ऽ	ग	रे	ग	मं॑मं॑	प	मं
						दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
रे	ऽ	ग	मं	रे	ऽ										
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ										
अंतरा															
								प	मं	ग	मं	प	ध	प	ऽ
								दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
मं	ध	नि	ध	मं	ध	प	ऽ								
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								मं	ध	मं	धनि	सां	नि	ध	ऽ
								दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ
रे	ऽ	ग	मं	रे	ऽ	ऩि	ध़								
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा								
								ऩि	रेरे	ग	मं	ध	निनि	रें	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नि	रेरें	गं	रें	नि	रें	सां	ऽ								
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	नि	रेरें	गं	रें	सां	नि	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
प	ऽ	ग	मं	रे	ऽ										
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ										

5.3.4 यमन राग की द्रुत गत 2

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

स्थायी

								नी़	रेरे	गग	रेरे	सा-	सानी़	ऽनी	रे
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा-
ग	–	म॑	प	रे	रे	सा	ऽ								
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								नी़	ध़ध़	नी़	रे	ग	रेरे	ग	म॑
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
प	म॑म॑	गग	म॑म॑	गऽ	गरे	ऽरे	सा-								
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा-								

अंतरा

								म॑	म॑म॑	ग	ग	म॑	धध	नी	नी
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	–	सां	सां	नी	रे	सा	–								
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								नी	रेंरें	गं	रें	नी	रें	सां	–
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
नी	धध	पप	म॑म॑	ग-	गरे	-रे	सा-								
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा-								

5.3.5 यमन राग के तोड़े

- सम से सम तक –

  नि़ध़ नि़रे गरे नि़रे ग- -- नि़ध़ ऩीरे गरे नि़रे ग- -- नि़ध़ नि़रे गरे नि़रे

- खाली से सम तक –

  नि़रे गरे ग- नि़रे गरे ग- नि़रे गरे

- सम से सम तक –

  नि़रे गरे ग- ग- ग- -- नि़रे गरे ग- ग- -- नि़रे गरे ग- ग-

- गत से सम तक –

  सांनि धप मग़ रेसा नि़रे गरे ग- सांनि धप मग़ रेसा

  नि़रे गरे ग- सांनि धप मग़ रेसा नि़रे गरे

- सम से सम तक –

  नि़सा रेनि़ सारे नि़सा मप धम़ पध मप निसां

  रेंनि सारें नि़सां गंगं रेंसां निसां रेंसां

- सम से सम तक –

  निनि धप मप धप मप गम़ गरे सा- नि़रे गरे

  ग- नि़रे गरे ग- नि़रे गरे

- सम से सम तक –

  गग रेसा ऩिसा रेसा ऩिऩि ध़प़ म़ंप़ ध़प़

  म़ंध़ ऩिरे सासा ऩिसा ऩिरे गमं पमं गमं

- सम से सम तक –

  मंध निरें सांसां निसां गरें सारें धनि धप धप मंप

  मंग मंग रेग रेसा ऩिरे गमं पमं गमं ग- -- ऩिरे

  गमं पमं गमं ग- -- ऩिरे गमं पमं गमं

- सम से सम तक –

  ऩिरे सासा ऩिरे गरे सासा ऩिरे गमं गरे सासा ऩिरे गमं

  पमं गमं गरे सासा ऩिरे गमं धप मंप गमं गरे सासा

  ऩिरे गमं धनि रेंसां सांनि धनि धप मंप मंप मंग रेसा

  ऩिसा ऩिरे ग- -ऩिरे ग- -ऩिरे

- ऩिरे गरे ऩिरे सासा पमं गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे गमं गमं पमं गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे पध पमं गमं पमं गरे सा-
- ऩिरे गमं धनि सांनि धप मंग रेरे ऩिसा
- गमं धनि रेंगं रेंसां निध पमं गरे साऽ

- सांनि धप म॑ग रेसा ऩिरे गम॑ धनि सांऽ
- ऩिरे गरे गम॑ गम॑ धम॑ धनि धनि सांऽ
- निरें गरें सारें सांनि धप म॑ध निरें सांऽ
- गग रेसा ऩीसा रेसा ऩीऩी ध़प़ म़॑प़ ध़प़

  म़॑ध़ ऩीरे सासा ऩीसा नीरे गम॑ पम॑ गम॑

  गम॑ धनी सांनी धप म॑ध नीरें गरें सांसां

  नीरें सांनी धप म॑प म॑ध पम॑ गरे सासा
- ऩीरे गम॑ पम॑ गरे साऽ पम॑ गरे साऽ

  पम॑ गरे साऽ ऩीरे गम॑ पम॑ गरे साऽ
- पम॑ गरे साऽ पम॑ गरे साऽ ऩीरे गम॑

  पम॑ गरे साऽ पम॑ गरे साऽ पम॑ गरे

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

5.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

5.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) रात्रि का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

5.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

5.5 यमन राग में निम्न में से किस स्वर का आरोह में लंघन होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

5.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) विलावल

घ) तोड़ी

5.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध़ नी़ रे प, म ग

ख) ध़ नी़ रे ग रे नि रे सा

ग) ध नि ध प म प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

5.8 यमन राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

5.9 यमन राग की द्रुत गत को केवल तीनताल में ही बजाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

5.10 यमन राग, विलावल तथा अल्हैया रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

5.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: घ)
5.2 उत्तर: ख)
5.3 उत्तर: क)
5.4 उत्तर: घ)
5.5 उत्तर: ख)
5.6 उत्तर: क)
5.7 उत्तर: ख)
5.8 उत्तर: ग)
5.9 उत्तर: ख)
5.10 उत्तर: ख)

5.7 संदर्भ

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-6
भैरव राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य तथा परिणाम
6.3	भैरव राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)
6.3.1	भैरव राग का परिचय
6.3.2	आरोह, अवरोह, पकड़
6.3.3	अलंकार
6.3.4	भैरव राग के अलंकार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में गायन संदर्भ में, भैरव राग का परिचय, आरोह, अवरोह, पकड़ तथा उसके अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है। इसे पलटा भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा इन्हीं अलंकारों मे माध्यम से अन्य अलंकारों की रचना करने में सहायता मिलती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भैरव राग के स्वरूप के साथ-साथ उनमें गाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक अलंकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से भैरव राग के , आरोह, अवरोह, पकड़ तथा अलंकारों को गा सकेगें।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरव राग के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- भैरव राग के अलंकारों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- भैरव राग के अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, भैरव राग के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, भैरव राग के अलंकारों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, भैरव राग के अलंकारों को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, गायन के अंतर्गत, भैरव राग में अलंकारों के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 भैरव राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)

6.3.1 भैरव राग का परिचय

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - रिषभ, धैवत कोमल (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - कलिंगड़ा

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सा नि ध, प म ग म रे सा

पकड़ - नि॒ सा ग म धध प, म ग म रे॒ रे॒ सा

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी धैवत तथा संवादी रिषभ है। भैरव राग का समय दिन का प्रथम प्रहर माना गया है।

भैरव राग में रिषभ को लगाने का अलग तरीका है। अगर हमने आरोह करते समय षड्ज से ऋषभ, गंधार, मध्यम तक जाना हो तो हम रिषभ का प्रयोग करते हैं, जैसे- सा रे॒, सा रे॒ ग सा रे॒ ग म। परन्तु यदि हमने पंचम का प्रयोग करना हो तो हम रिषभ का लंघन करते हैं, जैसे- सा रे॒ ग म, सा ग म प अर्थात् उत्तरांग की तरफ जाते समय (पंचम या उससे आगे) हम रिषभ का लंघन करते हैं। अवरोह करते समय रिषभ पर आंदोलन किया जाता है। यह आंदोलन दो, तीन बार तक किया जाता है। इसी प्रकार धैवत पर भी आंदोलन होता है। धैवत पर आंदोलन आरोह तथा अवरोह दोनों तरफ होता है जबकि रिषभ में केवल अवरोह के समय ही आंदोलन किया जाता है; जैसे- ग म ग रे॒ रे॒ ऽ रे॒ ऽ ग म नि ध॒ ऽ ध॒ ऽ प।

यह एक स्वतंत्र राग है। इसमें किसी अन्य राग की छाया नहीं आती है। कई अन्य रागों में भैरव अंग जोड़कर अन्य रागों की रचना की गई है, जैसे- भैरव बहार, अहीर भैरव आदि। भैरव का समप्रकृतिक राग कलिंगड़ा है। भैरव राग जहाँ गंभीर प्रकृति का राग है वहीं कलिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर न्यास किया जाता है वहीं कलिंगड़ा में गंधार तथा पंचम पर न्यास होता है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर आंदोलन अधिक रहता है। यह आंदोलन ही भैरव का मुख्य अंग है परन्तु कलिंगड़ा राग में इस प्रकार का आंदोलन बहुत कम रहता है।

6.3.2 आरोह, अवरोह, पकड़

आरोह-अवरोह

आरोह का अर्थ है ऊपर चढ़ना तथा अवरोह का अर्थ है नीचे उतरना। संगीत में आरोह-अवरोह का अर्थ है: जब नाद के आधार पर, नीचे से ऊपर अर्थात किसी स्वर से उपर के स्वर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते हैं और इसके ठीक विपरीत नाद के आधार पर, ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है। गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहा जाता है। गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहा

जाता है। आरोह तथा अवरोह राग के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाले वे पारिभाषिक शब्द हैं जो अधिकांशतः साथ-साथ प्रयुक्त होते हैं। आधुनिक राग लक्षणों में आरोह-अवरोह भी एक लक्षण है, उदाहरण के लिए

सा रे ग म प ध नि सां आरोही क्रम है और

सां नि ध प म ग रे सा अवरोही क्रम है।

आधुनिक राग लक्षण के अन्तर्गत आरोह-अवरोह का महत्व इसलिए भी अधिक है कि इनके द्वारा राग में स्वरों का प्रयोग किस क्रम में हुआ है कि निश्चित जानकारी प्राप्त होती है, क्योंकि आरोह-अवरोह का निर्माण उस राग के वर्जित स्वरों को छोड़कर एवं शेष स्वरों के प्रयोग द्वारा होता है जिससे इनके द्वारा स्वरों का प्रयोग किस क्रम में होगा, स्पष्ट होता है, साथ ही साथ आरोह-अवरोह राग की जाति के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यदि आरोह-अवरोह में सात-सात स्वर लगते हों तो सम्पूर्ण जाति यदि छः-छः लगते हों तो षाडव और यदि पांच-पांच स्वर लगते हों तो औडव जाति कहा जाता है। इसी प्रकार से यह अन्य जाति व उपजातियों के निर्धारण में सहायक सिद्ध होते हैं। नाद के आधार पर किसी स्वर से उपर के स्वर पर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते है और ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है।

पकड़

'पकड़ शब्द बोलचाल की भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ-पकड़ना, काबू करना व नियन्त्रित करना से लिया जाता है। 'पकड़ शब्द का यही अर्थ संगीत में यथावत ग्रहण किया गया है जिसका अर्थ है राग का वह छोटा सा समुदाय जिससे राग को पहचाना जा सके, उसे पकड़ कहते हैं। रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को पकड़ कहते हैं।

प्रत्येक राग में एक ऐसा स्वर समूह या समुदाय होता है जिसे गाने या बजाने से उसे राग का स्वरूप स्पष्ट तथा व्यक्त होता है। इसी विशिष्ट स्वर समुदाय को उस राग की पकड़ कहा जाता है जैसे राग भैरव की पकड़ सा रे ग म प ग म रे रे सा है। इस छोटे से स्वर समुदाय को गाते या बजाते ही राग भैरव का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है अर्थात इस पकड़ को गाते या बजाते ही श्रोताओं को राग भैरव का स्पष्ट बोध हो जाएगाता है।

6.3.3 अलंकार

प्राचीन ग्रंथकार 'अलंकार' की परिभाषा इस प्रकार करते हैं:-

विशिष्ट वर्ण संदर्भलंकार प्रचक्षते।।

अर्थात् -कुछ नियमित वर्ण-समुदायों को 'अलंकार' कहते हैं। 'अलंकार' का अर्थ है 'आभूषण' या 'गहना। जिस प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकारों के द्वारा गायन की शोभा बढ़ जाती है। 'अभिनव रागमंजरी' में लिखा है :-

शशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।

अविभूषिते कांता गीतिरलंकारहीना स्यात् ।।

अर्थात् - जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि, जल के बिना नदी, फूलों के बिना लता तथा आभूषणों के बिना स्त्री शोभा नहीं पाती, उसी प्रकार अलंकार-बिना गीत भी शोभा को प्राप्त नहीं होते ।

अलंकार को 'पलटा' भी कहते हैं। गायन सीखने से पहले विद्यार्थियों को अलंकार सिखाए जाते हैं, क्योंकि इसके बिना न तो अच्छा स्वर-ज्ञान ही होता है और न उन्हें आगे संगीत-कला में सफलता ही मिलती है। अलंकारों से राग-विस्तार में भी काफी सहायता मिलती है। अलंकारों के द्वारा राग की सजावट करके उसमें चार चाँद लगाए जा सकते हैं। तानें इत्यादि भी अलंकारों के आधार पर ही बनती हैं, जैसे 'सारे गरे गम ग म पऽ। रेग रे ग म प धऽ' इत्यादि। अलंकार वर्ण-समुदायों में ही होते हैं। उदाहरण के लिए वर्ण-समुदाय 'सा रे ग सा'।

इसमें आरोही-अवरोही, दोनों वर्ण आ गए हैं। इसे एक सीढ़ी मान सकते हैं। अब इसी आधार पर आगे बढ़ते हैं और पिछला स्वर छोड़कर आगे का स्वर बढ़ाते जाते हैं, रे ग म रे यह दूसरी सीढ़ी है; गमपग यह तीसरी सीढ़ी है। इसी प्रकार बहुत-से अलंकार तैयार किए जा सकते हैं। शुद्ध स्वरों के अलावा कोमल तीव्र स्वरों के अलंकार भी तैयार किए जा सकते हैं, किन्तु उनमें यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि जिस राग में जो स्वर लगते हैं, वे ही स्वर उस राग के अलंकारों में लगाएं जाएँ।

6.3.4 भैरव राग के अलंकार

1. **आरोह-**

सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां

अवरोह-

सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा

2. **आरोह-**

सा सा, रे॒ रे॒, ग ग, म म, प प, ध॒ ध॒, नि नि, सां सां

अवरोह-

सां सां, नि नि, ध॒ ध॒, प प, म म, ग ग, रे॒ रे॒ सा सा

3. **आरोह-**

सा सा सा, रे॒ रे॒ रे॒, ग ग ग, म म म, प प प, ध॒ ध॒ ध॒, नि नि नि, सां सां सां

अवरोह-

सां सां सां, नि नि नि, ध॒ ध॒ ध॒, प प प, म म म, ग ग ग, रे॒ रे॒ रे॒ सा सा सा

4. **आरोह-**

सा रे॒ सा, रे॒ ग रे॒ ग म ग, म प म, प ध॒ प, ध॒ नि ध॒, नि सां नि, सां रे॒ सां

अवरोह-

सां रे॒ सां, नि सां नि, ध॒ नि ध॒, प ध॒ प, म प म, ग म ग, रे॒ ग रे॒ सा रे॒ सा

5. **आरोह-**

सा रे॒ ग, रे॒ ग म, ग म प, म प ध॒, प ध॒ नि, ध॒ नि सां

अवरोह-

सां नि ध॒, नि ध॒ प, ध॒ प म, प म ग, म ग रे॒ ग रे॒ सा

6. **आरोह-**

सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

7. **आरोह-**

सा रे ग म प, रे ग म प ध, ग म प ध नि, म प ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध प म, नि ध प म ग, ध प म ग रे प म ग रे सा

8. **आरोह-**

सा ग रे रे म ग, ग प म, म ध प, प नि ध ध सां नि, नि रे सां

अवरोह-

नि रे सां, ध सां नि, प नि ध, म ध प, ग प म, रे म ग, सा ग रे

9. **आरोह-**

सा रे ग सा, रे ग म रे ग म प ग, म प ध म, प ध नि प,
ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

अवरोह-

सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प,
म प ध म, ग म प ग, रे ग म रे, सा रे ग सा

10. **आरोह-**

सा ग रे सा, रे म ग रे, ग प म ग, म ध प म, प नि ध प,
ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

अवरोह-

सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, म ध प म,

ग प म ग, रे म ग रे, सा ग रे सा

11. **आरोह-**

सा ग म रे सा, रे म प ग रे, ग प ध म ग,

म ध नि प म, प नि सां ध प, ध सां रें नि ध,

नि रें गं सां नि, सां गं मं रें सां

अवरोह-

सां गं मं रें सां, नि रें गं सां नि, ध सां रें नि ध,

प नि सां ध प, म ध नि प म, ग प ध म ग,

रे म प ग रे, सा ग म रे सा

12. **आरोह-**

सा ग, रे म, ग प, म ध, प नि, ध सां

अवरोह-

सां ध, नि प, ध म, प ग, म रे, ग सा

13. **आरोह-**

सा म, रे प, ग ध, म नि, प सां

अवरोह-

सां प, नि म, ध ग, प रे, म सा

14. **आरोह-**

सा प, रे ध, ग नि, प सां

अवरोह-

सां प, नि ग, ध रे, प सा

15. **आरोह-**

सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध,

प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

अवरोह-

सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म, प म प म ग,

म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

16. **आरोह-**

सा रे ग सा रे ग म, रे ग म रे ग म प, ग म प ग म प ध,

म प ध म प ध नि, प ध नि प ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प म, ध प म ध प म ग,

प म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे सा

17. **आरोह-**

सा रे, रे ग, ग म, म प, प ध, ध नि, नि सां

अवरोह-

सां नि, नि ध, ध प, प म, म ग, ग रे, रे सा

18. **आरोह-**

सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग म ग रे, ग म ग ग म प म ग,

म प म म प ध प म, प ध प प ध नि ध प, ध नि ध ध नि सां नि ध,

नि सां नि नि सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

अवरोह-

सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नि नि सां रें सां नि, ध नि ध ध नि सां नि ध,

प ध प प ध नि ध प, म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग,

रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19. **आरोह-**

सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे म, ग म ग म ग प, म प म प म ध,

प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

अवरोह-

सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध म, प म प म प ग,

म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

20. **आरोह-**

सा रे रे ग, रे ग ग म, ग म म प, म प प ध,

प ध ध नि, ध नि नि सां

अवरोह-

सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प म, प म म ग,

म ग ग रे, ग रे रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 जब स्वरों का आरोह या अवरोह नियमानुसार किया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) तोड़ा

घ) लय

6.2 गायन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) लय

घ) संगीत

6.3 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म प प प, ध ध ध,

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

6.4 गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

6.5 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

6.6 रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

6.7 गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

6.4 सारांश

भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यह अलंकार अलग-अलग छंदों में होते हैं जो विलंबित लय में, मध्य लय में तथा द्रुत लय में गाए जाते हैं। इन्हीं अलंकारों से, राग के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों तथा तानों का निर्माण किया जाता है।

6.5 शब्दावली

- अलंकार: साधारण शब्दों में जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहते हैं।
- गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहते हैं।
- विलंबित लय: गायन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: गायन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: ख)

6.2 उत्तर: ग)

6.3 उत्तर: ख)

6.4 उत्तर: ख)

6.5 उत्तर: ख)

6.6 उत्तर: ग)

6.7 उत्तर: क)

6.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भैरव का आरोह तथा अवरोह लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 4. अलंकार क्या होते हैं।

प्रश्न 5. आरोह तथा अवरोह से आप क्या समझते हैं, लिखिए।

इकाई-7
यमन राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	यमन राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)
7.3.1	यमन राग का परिचय
7.3.2	आरोह, अवरोह, पकड़
7.3.3	अलंकार
7.3.4	यमन राग के अलंकार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संदर्भ में, यमन राग का परिचय, आरोह, अवरोह, पकड़ तथा उसके अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है। इसे पलटा भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा इन्हीं अलंकारों मे माध्यम से अन्य अलंकारों की रचना करने में सहायता मिलती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी यमन राग के स्वरूप के साथ-साथ उनमें गाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक अलंकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से यमन राग के , आरोह, अवरोह, पकड़ तथा अलंकारों को गा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के अलंकारों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, यमन राग के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, यमन राग के अलंकारों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, यमन राग के अलंकारों को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, गायन के अंतर्गत, यमन राग में अलंकारों के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 यमन राग का परिचय तथा अलंकार (गायन के संदर्भ में)

7.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (म॑)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩी रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩी ध़ ऩी रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है।

इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

7.3.2 आरोह, अवरोह, पकड़

आरोह-अवरोह

आरोह का अर्थ है ऊपर चढ़ना तथा अवरोह का अर्थ है नीचे उतरना। संगीत में आरोह-अवरोह का अर्थ है: जब नाद के आधार पर, नीचे से ऊपर अर्थात किसी स्वर से उपर के स्वर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते हैं और इसके ठीक विपरीत नाद के आधार पर, ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है। गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहा जाता है।

गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहा जाता है। आरोह तथा अवरोह राग के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाले वे पारिभाषिक शब्द हैं जो अधिकांशतः साथ-साथ प्रयुक्त होते हैं। आधुनिक राग लक्षणों में आरोह-अवरोह भी एक लक्षण है, उदाहरण के लिए

सा रे ग म॑ प ध नि सां आरोही क्रम है और

सां नि ध प म॑ ग रे सा अवरोही क्रम है।

आधुनिक राग लक्षण के अन्तर्गत आरोह-अवरोह का महत्व इसलिए भी अधिक है कि इनके द्वारा राग में स्वरों का प्रयोग किस क्रम में हुआ है कि निश्चित जानकारी प्राप्त होती है, क्योंकि आरोह-अवरोह का निर्माण उस राग के वर्जित स्वरों को छोड़कर एवं शेष स्वरों के प्रयोग द्वारा होता है जिससे इनके द्वारा स्वरों का प्रयोग किस क्रम में होगा, स्पष्ट होता है, साथ ही साथ आरोह-अवरोह राग की जाति के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यदि आरोह-अवरोह में सात-सात स्वर लगते हों तो सम्पूर्ण जाति यदि छः-छः लगते हों तो षाडव और यदि पांच-पांच स्वर लगते हों तो औडव जाति कहा जाता है। इसी प्रकार से यह अन्य जाति व उपजातियों के निर्धारण में सहायक सिद्ध होते हैं। नाद के आधार पर किसी स्वर से उपर के स्वर पर क्रमानुसार या बिना किसी क्रम से बढ़ने को आरोह कहते है और ऊपर से नीचे की ओर उतरने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है।

पकड़

'पकड़ शब्द बोलचाल की भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ-पकड़ना, काबू करना व नियन्त्रित करना से लिया जाता है। 'पकड़ शब्द का यही अर्थ संगीत में यथावत ग्रहण किया गया है जिसका अर्थ है राग का वह छोटा सा समुदाय जिससे राग को पहचाना जा सके, उसे पकड़ कहते हैं। रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को पकड़ कहते हैं।

प्रत्येक राग में एक ऐसा स्वर समूह या समुदाय होता है जिसे गाने या बजाने से उसे राग का स्वरूप स्पष्ट तथा व्यक्त होता है। इसी विशिष्ट स्वर समुदाय को उस राग की पकड़ कहा जाता है जैसे राग यमन की पकड़ ऩी रे ग, ऩी रे सा, प म॑ ग रे, ऩी रे सा है। इस छोटे से स्वर समुदाय को गाते या बजाते ही राग यमन का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है अर्थात इस पकड़ को गाते या बजाते ही श्रोताओं को राग यमन का स्पष्ट बोध हो जाएगाता है।

7.3.3 अलंकार

प्राचीन ग्रंथकार 'अलंकार' की परिभाषा इस प्रकार करते हैं:-

विशिष्ट वर्ण संदर्भलंकार प्रचक्षते।।

अर्थात् -कुछ नियमित वर्ण-समुदायों को 'अलंकार' कहते हैं। 'अलंकार' का अर्थ है 'आभूषण' या 'गहना। जिस प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकारों के द्वारा गायन की शोभा बढ़ जाती है। 'अभिनव रागमंजरी' में लिखा है :-

शशिना रहितेव निशा विजलेव नदी लता विपुष्पेव।

अविभूषिते कांता गीतिरलंकारहीना स्यात् ।।

अर्थात् - जैसे चन्द्रमा के बिना रात्रि, जल के बिना नदी, फूलों के बिना लता तथा आभूषणों के बिना स्त्री शोभा नहीं पाती, उसी प्रकार अलंकार-बिना गीत भी शोभा को प्राप्त नहीं होते ।

अलंकार को 'पलटा' भी कहते हैं। गायन सीखने से पहले विद्यार्थियों को अलंकार सिखाए जाते हैं, क्योंकि इसके बिना न तो अच्छा स्वर-ज्ञान ही होता है और न उन्हें आगे संगीत-कला में सफलता ही मिलती है। अलंकारों से राग-विस्तार में भी काफी सहायता मिलती है। अलंकारों के द्वारा राग की सजावट करके उसमें चार चाँद लगाए जा सकते हैं। तानें इत्यादि भी अलंकारों के आधार पर ही बनती हैं, जैसे 'सारे गरे गमं ग मं पऽ। रेग रे ग मं प धऽ' इत्यादि। अलंकार वर्ण-समुदायों में ही होते हैं। उदाहरण के लिए वर्ण-समुदाय 'सा रे ग सा'। इसमें आरोही-अवरोही, दोनों वर्ण आ गए हैं। इसे एक सीढ़ी मान सकते हैं। अब इसी आधार पर आगे बढ़ते हैं और पिछला स्वर छोड़कर आगे का स्वर बढ़ाते जाते हैं, रे ग म रे यह दूसरी सीढ़ी है; गमपग यह तीसरी सीढ़ी है। इसी प्रकार बहुत-से अलंकार तैयार किए जा सकते हैं। शुद्ध स्वरों के अलावा कोमल तीव्र स्वरों के अलंकार भी तैयार किए जा सकते हैं, किन्तु उनमें यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि जिस राग में जो स्वर लगते हैं, वे ही स्वर उस राग के अलंकारों में लगाएं जाएँ।

7.3.4 यमन राग के अलंकार

1 आरोह-

सा रे ग मं प ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध प मं ग रे सा

2 आरोह-

सा सा, रे रे, ग ग, म॑ म॑, प प, ध ध, नि नि, सां सां

अवरोह-

सां सां, नि नि, ध ध, प प, म॑ म॑, ग ग, रे रे, सा सा

3 आरोह-

सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म॑ म॑ म॑, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

अवरोह-

सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, म॑ म॑ म॑, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

4 आरोह-

सा रे सा, रे ग रे, ग म॑ ग, म॑ प म॑, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

अवरोह-

सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म॑ प म॑, ग म॑ ग, रे ग रे, सा रे सा

5 आरोह-

सा रे ग, रे ग म॑, ग म॑ प, म॑ प ध, प ध नि, ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध, नि ध प, ध प म॑, प म॑ ग, म॑ ग रे, ग रे सा

6 आरोह-

सा रे ग म॑, रे ग म॑ प, ग म॑ प ध, म॑ प ध नि, प ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध प, नि ध प म॑, ध प म॑ ग, प म॑ ग रे, म॑ ग रे सा

7 आरोह-

सा रे ग म॑ प, रे ग म॑ प ध, ग म॑ प ध नि, म॑ प ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध प म़, नि ध प म़ ग, ध प म़ ग रे, प म़ ग रे सा

8 आरोह-

सा ग रे, रे म़ ग, ग प म़, म़ ध प, प नि ध, ध सां नि, नि रें सां

अवरोह-

नि रें सां, ध सां नि, प नि ध, म़ ध प, ग प म़, रे म़ ग, सा ग रे

9 आरोह-

सा रे ग सा, रे ग म़ रे, ग म़ प ग, म़ प ध म़, प ध नि प, ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

अवरोह-

सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प, म़ प ध म़, ग म़ प ग, रे ग म़ रे, सा रे ग सा

10 आरोह-

सा ग रे सा, रे म़ ग रे, ग प म़ ग, म़ ध प म़, प नि ध प, ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

अवरोह-

सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, म़ ध प म़, ग प म़ ग, रे म़ ग रे, सा ग रे सा

11 आरोह-

सा ग म़ रे सा, रे म़ प ग रे, ग प ध म़ ग, म़ ध नि प म़,
प नि सां ध प, ध सां रें नि ध, नि रें गं सां नि, सां गं म़ रें सां

अवरोह-

सां गं म़ रें सां, नि रें गं सां नि, ध सां रें नि ध, प नि सां ध प,
म़ ध नि प म़, ग प ध म़ ग, रे म़ प ग रे, सा ग म़ रे सा

12 आरोह-

सा ग, रे म़, ग प, म़ ध, प नि, ध सां

अवरोह-

सां ध, नि प, ध मं, प ग, मं रे, ग सा

13 आरोह-

सा मं, रे प, ग ध, मं नि, प सां

अवरोह-

सां प, नि मं, ध ग, प रे, मं सा

14 आरोह-

सा प, रे ध, ग नि, प सां

अवरोह-

सां प, नि ग, ध रे, प सा

15 आरोह-

सा रे सा रे ग, रे ग रे ग मं, ग मं ग मं प, मं प मं प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

अवरोह-

सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प मं, प मं प मं ग, मं ग मं ग रे, ग रे ग रे सा

16 आरोह-

सा रे ग सा रे ग मं, रे ग मं रे ग मं प, ग मं प ग मं प ध, मं प ध मं प ध नि, प ध नि प ध नि सां

अवरोह-

सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प मं, ध प मं ध प मं ग, प मं ग प मं ग रे, मं ग रे मं ग रे सा

17 आरोह-

सा रे, रे ग, ग मं, मं प, प ध, ध नि, नि सां

अवरोह-

सां नि, नि ध, ध प, प मं, मं ग, ग रे, रे सा

18 आरोह-

सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग म॑ ग रे, ग म॑ ग ग म॑ प म॑ ग,

म॑ प म॑ म॑ प ध प म॑, प ध प प ध नि ध प, ध नि ध ध नि सां नि ध,

नि सां नि नि सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

अवरोह-

सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नि नि सां रें सां नि, ध नि ध ध नि सां नि ध,

प ध प प ध नि ध प, म॑ प म॑ म॑ प ध प म॑, ग म॑ ग ग म॑ प म॑ ग,

रे ग रे रे ग म॑ ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19 आरोह-

सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे म॑, ग म॑ ग म॑ ग प, म॑ प म॑ प म॑ ध, प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

अवरोह-

सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध म॑, प म॑ प म॑ प ग, म॑ ग म॑ ग म॑ रे, ग रे ग रे ग सा

20 आरोह-

सा रे रे ग, रे ग ग म॑, ग म॑ म॑ प, म॑ प प ध, प ध ध नि, ध नि नि सां

अवरोह-

सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प म॑, प म॑ म॑ ग, म॑ ग ग रे, ग रे रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 जब स्वरों का आरोह या अवरोह नियमानुसार किया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) तोड़ा

घ) लय

7.2 वादन/गायन में बीत रहे समय की समान गति को क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) लय

घ) संगीत

7.3 निम्न में से कौन सा अलंकार यमन राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म॑ म॑ म॑ प प प, ध ध ध,

ख) रे रे रे, ग ग ग, म॑ म॑ म॑, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, नि नि नि,

7.4 गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

7.5 निम्न में से कौन सा अलंकार यमन राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म॑ म॑, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

7.6 रागवाचक मुख्य स्वर समुदाय को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

7.7 गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को क्या कहते हैं?

क) आरोह

ख) अवरोह

ग) पकड़

घ) तान/तोड़ा

7.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यह अलंकार अलग-अलग छंदों में होते हैं जो विलंबित लय में, मध्य लय में तथा द्रुत लय में गाए जाते हैं। इन्हीं अलंकारों से, राग के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों तथा तानों का निर्माण किया जाता है।

7.5 शब्दावली

- अलंकार: साधारण शब्दों में जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- गाते/बजाते समय स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहते हैं।
- गाते/बजाते समय स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहते हैं।
- विलंबित लय: गायन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: गायन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: ख)

7.2 उत्तर: ग)

7.3 उत्तर: ख)

7.4 उत्तर: ख)

7.5 उत्तर: ख)

7.6 उत्तर: ग)

7.7 उत्तर: क)

7.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग यमन का आरोह तथा अवरोह लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 4. अलंकार क्या होते हैं।

प्रश्न 5. आरोह तथा अवरोह से आप क्या समझते हैं, लिखिए।

इकाई-8
भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	राग भैरव
8.3.1	भैरव राग का परिचय
8.3.2	भैरव राग का आलाप
8.3.3	भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत
8.3.4	भैरव राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भैरव का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरव का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरव राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 राग भैरव

8.3.1 भैरव राग का परिचय

राग- भैरव

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - ऋषभ, धैवत (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ऩी सा ग म ध ध प, ग म रे रे सा

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी धैवत तथा संवादी रिषभ है। भैरव राग का समय दिन का प्रथम प्रहर माना गया है।

भैरव राग में रिषभ को लगाने का अलग तरीका है। अगर हमने आरोह करते समय षड्ज से ऋषभ, गंधार, मध्यम तक जाना हो तो हम रिषभ का प्रयोग करते हैं, जैसे- सा रे, सा रे ग सा रे ग म। परन्तु यदि हमने पंचम का प्रयोग करना हो तो हम रिषभ का लंघन करते हैं, जैसे- सा रे ग म, सा ग म प अर्थात् उत्तरांग की तरफ जाते समय (पंचम या उससे आगे) हम रिषभ का लंघन करते हैं। अवरोह करते समय रिषभ पर आंदोलन किया जाता है। यह आंदोलन दो, तीन बार तक किया जाता है। इसी प्रकार धैवत पर भी आंदोलन होता है। धैवत पर आंदोलन आरोह तथा अवरोह दोनों तरफ होता है जबकि रिषभ में केवल अवरोह के समय ही आंदोलन किया जाता है; जैसे- ग म ग रे रे ऽ रे ऽ ग म नि ध ऽ ध ऽ प।

यह एक स्वतंत्र राग है। इसमें किसी अन्य राग की छाया नहीं आती है। कई अन्य रागों में भैरव अंग जोड़कर अन्य रागों की रचना की गई है, जैसे- भैरव बहार, अहीर भैरव आदि। भैरव का समप्रकृतिक राग कलिंगड़ा है। भैरव राग जहाँ गंभीर प्रकृति का राग है वहीं कलिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर न्यास किया जाता है वहीं कलिंगड़ा में गंधार तथा पंचम पर न्यास होता है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर आंदोलन अधिक रहता है। यह आंदोलन ही भैरव का मुख्य अंग है परन्तु कलिंगड़ा राग में इस प्रकार का आंदोलन बहुत कम रहता है।

8.3.2 भैरव राग का आलाप

- सा रे रे सा,सा ध़, नि़ नि़ ध़, नि़ ध़ प़,

  प़ ध़ नि़ सा रे रे सा।

- नि़ सा ग म रे सा, ध़ नि़ नि़ रे सां,

  ध़ नि़ ध़ प़, प़ म़ ग़ प़, ग म प ग म रे रे सा।

- ग म प ध़ प, नि़ सा ग म रे नि

  सा ग म ध़ प,

  म प ध़ प, ग म रे रे सा।

- ग म प ध, ध ध सां ध नि ध प, ध नि सां रें सां,

  सां नि ध ध नि ध प, ध प म ग म ध प ग म रे,

  रे सां नि ध नि सां रे सां, सां नि ध प म ग रे सा

- ग म ध – नि- नि सां, सां रें, सां गं मं रें रें सां रें सां

  नि ध ध प, ध प म ग म ध प, ग म रें रें सां

  नि ध ध प ध प म ग म ध प ग म रे - रे – सा।

8.3.3 भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत

राग: भैरव **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

स्थाई:

जागो मोहन प्यारे

सांवरी सूरत मोरे मन हीं भावे

सुंदर श्याम हमारे

अन्तरा:

ग्वाल-बाल सब भूपति आये

तुम्हरे दरश के कारज ठाढ़े

उठि-उठि नंद किशोर

0				3				x				2			
9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
स्थाई:															
(म)ग	म	(नी)ध	-	प	-	ध	म	मप	धप	म	प	म	-	ग	-
जा	s	गो	s	मो	s	ह	न	प्या	ss	s	s	रे	s	s	s
ग	म	ग	रे	ग	म	प	प	म	ग	म	ग	रे	रे	सा	-
सां	व	रि	सू	र	त	मो	रे	म	न	हीं	s	भा	s	वे	s
सा	रे	ग	म	प	-	ध	प	पध	निसां	नि	सां	ध	प	धप	म
सुं	s	द	र	श्या	s	म	ह	माs	ss	s	s	रे	s	ss	s
(म)ग	म	(नी)ध	-	प	-	ध	म	मप	धप	म	प	म	-	ग	-
जा	s	गो	s	मो	s	ह	न	प्या	ss	s	s	रे	s	s	s
अंतरा:															
म	-	म	म	प	प	ध	ध	प	ध	सां	नि	सां	सां	सां	सां
प्रा	s	त	स	म	य	उ	ठ	भा	s	नु	उ	द	य	भ	ये
ध	-	ध	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	रें	सां	ध	-	प	-
ग्वा	s	ल	बा	s	ल	स	ब	भू	s	प	ति	आ	s	ये	s
प	ध	प	म	ग	ग	गम	प	म	ग	म	ग	रे	-	सा	-
तु	म्ह	रे	द	र	श	केs	s	का	s	र	ज	ठा	s	ढे	-
सा	रे	ग	म	प	-	प	ध	पध	निसां	नि	सां	ध	प	धप	म
उ	ठि	उ	ठि	नं	s	द	कि	शोs	ss	s	s	र	s	ss	s
(म)ग	म	(नी)ध	-	प	-	ध	म	मप	धप	म	प	म	-	ग	-
जा	s	गो	s	मो	s	ह	न	प्या	ss	s	s	रे	s	s	s

8.3.4 भैरव राग की तानें

सम से सम तक:-

- सांनि धप मग रेसा नि़सा गम रेसा नि़सा सांनि सांनि धप

  म- निध निध पम गरे

- सांनि सांनि धप निध निध पम गरे नि़सा सारे गग

  रेग मम गम पप गम रेसा

- सारे गग रेग मम गम पप मप धध पध निनि धनि सांसां

  निध पम गम रेसा

सम से खाली तक:-

- नि़सा गम धध पम गम पम गरे नि़सा पम गम

  धध पम पम गम रेसा नि़सा

सम से सम तक:-

- निसां गंमं गरें सांनि धनि सारें सांनि धप मप धनि

  धप मप गम रेरे सासा नि़सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 भैरव राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

8.2 भैरव राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

8.3 भैरव राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

8.4 भैरव राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) धैवत

घ) कोई भी नहीं

8.5 भैरव राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) म

ग) ध

घ) कोई भी नहीं

8.6 भैरव राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

8.7 भैरव राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध प, म ग म रे सा

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

8.8 भैरव राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

8.9 भैरव राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

8.10 भैरव राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

8.4 सारांश

भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरव राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

8.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: ग)

8.2 उत्तर: घ)

8.3 उत्तर: क)

8.4 उत्तर: ग)

8.5 उत्तर: घ)

8.6 उत्तर: ग)

8.7 उत्तर: क)

8.8 उत्तर: ग)

8.9 उत्तर: ख)

8.10 उत्तर: ख)

8.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

8.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरव का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरव का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरव के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-9
यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	राग यमन
9.3.1	यमन राग का परिचय
9.3.2	यमन राग का आलाप
9.3.3	यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत 1
9.3.4	यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत 2
9.3.5	यमन राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह नवम इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग यमन का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 राग यमन

9.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (म॑)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है। इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

9.3.2 यमन राग का आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।
- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़,
  म॑ ध़ प़, म॑ ध़ ऩी रे सा सा।
- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा, म॑ ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा
- ऩी रे, ग म॑ म॑ प, प, म॑ ग, रे ग म॑, म॑ ग रे सा
- ग म॑ प, प, म॑ ध प, प, म॑ ध नी नी ध प, प,
  म॑ ध नी नी रें सां, सां
- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां, नी रें, गं मं गं,
  रें गं, गं रें सां
- रें नी ध प, प, म॑ ध प म॑ ग, रे म॑ ग रे ऩी रे सा

9.3.3 यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत 1

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

स्थाई- श्याम बजाये आज मुरलिया,

धुन सुन मैं हो गयी रे बांवरिया।

अंतरा- मुरली बजावत धेनु चरावत,

कितहूँ छिप गये आज सांवरिया।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
								ग	रे	ग	रे	ऩि	रे	सा	सा
								श्या	ऽ	म	ब	जा	ऽ	व	त
ऩि	ध़	ऩि	रे	गग	रे	ग	ऽ								
आ	ऽ	ज्	मु	र	ऽ	ली	या								
								म	ध	मं	ध	मंध	निसां	सां	सां
								धु	न	सु	न	मैंऽ	ऽ	हो	ऽ
नि	ध	प	प	पमं	गरे	ग	ग								
ग	ई	रे	बा	वऽ	रीऽ	या	ऽ								
अंतरा															
								म	ध	मं	ध	मंध	निसां	सां	सां
								मु	र	ली	ब	जाऽ	ऽऽ	व	त
नि	रें	गं	रें	सांनि	रें	सां	सां								
धे	ऽ	नु	च	राऽ	ऽ	व	त								
								नि	नि	नि	सां	नि	निध	प	प
								कि	त	हूँ	ऽ	छि	पऽ	ग	ये
मं	मं	प	प	पमं	गरे	ग	ग								
आ	ऽ	ज्	सां	वऽ	रिऽ	या	ऽ								

9.3.4 राग यमन का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत 2

राग: यमन **ताल: एक ताल** **लय: मध्य**

स्थायी

सब गुणी जन इमन गात

तीवर सुर करत साथ

सासा रेरे गग मंमं पप धध नीनी

रेंरें गंरें सांरें सांनी धप

अंतरा

सुर वादी गंधार साध

सम वादी कर निखाद

रात समय प्रथम प्रहर

चतुर सुजन मन रिझात

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
पसां	सां	नी	धनी	धमं	प	मंप	प	मं	ग	-	ग
स	ब	गु	नी	ज	न	इ	म	न	गा	-	त
मंग	-	ग	रे	ग	प	गरे	ग	रे	रेनी	रे	सा
ती	-	व	र	सु	र	क	र	त	सा	-	थ
सा	सा	रे	रे	ग	ग	मं	मं	प	प	ध	ध
नी	नी	रें	रें	गं	रें	नीसां	रें	सां	नी	ध	प

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
[म॑]प	ग	प	-	ध	प	[प]सां	-	सां	सां	-	सां
सु	र	वा	-	दी	गं	धा	-	र	सा	-	ध
[नी]सां	सां	रें	-	गं	रें	सां	सां	नी	[ध]नी	ध	प
स	म	वा	-	दी	-	क	र	नि	खा	-	द
प	ग	ग	प	प	प	[प]नी	नी	ध	न	ध	प
रा	-	त	स	म	य	प्र	थ	म	प्र	ह	र
सां	सं	नी	[ध]नी	म॑	प	प	ग	प	[ग]रे	-	सा
च	तु	र	सु	ज	न	म	न	रि	झा	-	त
स्थायी											
[प]सां	सां	नी	[ध]नी	[ध]म॑	प	[म॑]प	प	म॑	ग	-	ग
स	ब	गु	नी	ज	न	इ	म	न	गा	-	त
[म॑]ग	-	ग	रे	ग	प	[ग]रे	ग	रे	[रे]ऩी	रे	सा
ती	-	व	र	सु	र	क	र	त	सा	-	थ
सा	सा	रे	रे	ग	ग	म॑	म॑	प	प	ध	ध
नी	नी	रें	रें	गं	रें	[नी]सां	रें	सां	नी	ध	प

9.3.5 यमन की तानें

- खाली से सम तक –

  नि़रे गरे ग- नि़रे गरे ग- नि़रे गरे

- सम से सम तक –

  नि़रे गरे ग- ग- ग- -- नि़रे गरे ग- ग- -- नि़रे गरे ग- ग-

- सम से सम तक –

  नि़ध़ नि़रे गरे नि़रे ग- -- नि़ध़ नीरे गरे नि़रे ग- -- नि़ध़ नि़रे गरे नि़रे

- गत से सम तक –

  सांनि धप मग़ रेसा नि़रे गरे ग- सांनि धप मग़ रेसा

  नि़रे गरे ग- सांनि धप मग़ रेसा नि़रे गरे

- सम से सम तक –

  नि़सा रेनि़ सारे नि़सा मप़ धम़ पध मप़ निसां

  रेंनि सारें नि़सां गंगं रेंसां निसां रेंसां

- सम से सम तक –

  निनि धप मप़ धप मप़ गम़ गरे सा- नि़रे गरे

  ग- नि़रे गरे ग- नि़रे गरे

- सम से सम तक –

  गग रेसा नि़सा रेसा नि़नि़ ध़प़ म़प़ ध़प़

म॑ध़ ऩिरे सासा ऩिसा ऩिरे गम॑ पम॑ गम॑

- सम से सम तक –

  मं॑ध निरें सांसां निसां गरें

  सारें धनि धप धप मं॑प

  मं॑ग मं॑ग रेग रेसा ऩिरे गम॑

  पम॑ गम॑ ग- -- ऩिरे

  गम॑ पम॑ गम॑ ग- --

  ऩिरे गम॑ पम॑ गम॑

- सम से सम तक –

  ऩिरे सासा ऩिरे गरे सासा ऩिरे

  गम॑ गरे सासा ऩिरे गम॑

  पम॑ गम॑ गरे सासा ऩिरे गम॑

  धप मं॑प गम॑ गरे सासा

  ऩिरे गम॑ धनि रेंसां सांनि धनि

  धप मं॑प मं॑प मं॑ग रेसा

  ऩिसा ऩिरे ग- -ऩिरे ग- -ऩिरे

- ऩिरे गरे ऩिरे सासा पम॑ गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे गम॑ गम॑ पम॑ गरे ऩिरे सासा

- ऩिरे गरे पध पमं गमं पमं गरे सा-
- ऩिरे गमं धनि सांनि धप मंग रेरे ऩिसा
- गमं धनि रेंगं रेंसां निध पमं गरे साऽ
- सांनि धप मंग रेसा ऩिरे गमं धनि सांऽ
- ऩिरे गरे गमं गमं धमं धनि धनि सांऽ
- निरें गरें सारें सांनि धप मंध निरें सांऽ
- गग रेसा ऩीसा रेसा ऩीऩी ध़प़ म़ंप़ ध़प़

  म़ंध़ ऩीरे सासा ऩीसा नीरे गमं पमं गमं

  गमं धनी सांनी धप मंध नीरें गरें सांसां

  नीरें सांनी धप मंप मंध पमं गरे सासा

  ऩीरे गमं पमं गरे साऽ पमं गरे साऽ

  पमं गरे साऽ ऩीरे गमं पमं गरे साऽ

  पमं गरे साऽ पमं गरे साऽ ऩीरे गमं

  पमं गरे साऽ पमं गरे साऽ पमं गरे

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

9.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

9.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

9.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

9.5 यमन राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म'

घ) सा

9.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) विलावल

घ) तोड़ी

9.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म' ग

ख) ध सां नि ध प, म' ग

ग) ध नि ध प म॑ प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म॑ ग

9.8 यमन राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

9.9 यमन राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

9.10 यमन राग, विलावल तथा अल्हैया रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

9.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

9.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: ग)

9.2 उत्तर: घ)

9.3 उत्तर: क)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: ग)

9.6 उत्तर: ग)

9.7 उत्तर: क)

9.8 उत्तर: ग)

9.9 उत्तर: ख)

9.10 उत्तर: ख)

9.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

प्रश्न 5. राग यमन के आलाप को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 6. राग यमन के छोटा ख्याल को गाकर सुनाइए।

इकाई-10
ताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	तीन ताल, दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
10.3.1	तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
10.3.2	दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल, दादरा ताल आदि तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तीन ताल, दादरा ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तीन ताल, दादरा ताल का परिचय प्रदान करना।
- तीन ताल, दादरा ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- तीन ताल, दादरा ताल को लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

10.3 तीन ताल, दादरा ताल

10.3.1 तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	16
विभाग	04
ताली	03
खाली	01

तीन ताल 16 मात्रा की ताल है। यह ताल 4 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 4 मात्राओं के होते हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर सम, पांचवी व तेहरवीं मात्रा पर ताली तथा नौवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, विलंबित गतें, द्रुत गतें, ठुमरी इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। फिल्मी संगीत में इस ताल का काफी प्रयोग होता है।

तालिपि

एकगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा

दुगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा

तिगुण

x			**2**				
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं धीं	धा धा धीं	धींधाधा	तींतीं ता	ताधींधीं	धा धाधीं	धींधा धा	धीं धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धातीं तीं	तिताधीं	धींधा धा	धीं धींधा	धा धींधीं	धाधातीं	तींताता	धींधींधा

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7	8
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
x				**2**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
0				**3**			

10.3.2 दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 06

विभाग 02

ताली 01

खाली 01

एक ताल 06 मात्रा की ताल है। यह ताल 2 विभागों में विभक्त है। दोनों विभाग 3 मात्राओं के हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर ताली व चौथी मात्रा पर खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल मध्य लय, द्रुत लय में बजाई जाती है। इस ताल को भारतीय सुगम संगीत में गीत, गज़ल, भजन आदि के साथ बजाया जाता है। यह तबले पर बजाए जाने वाला एक ताल है।

ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6
धा	धी	ना	धा	ती	ना
x			**0**		

दुगुण

1	2	3	4	5	6
धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
x			**0**		

तिगुण

1	2	3	4	5	6
धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना
x			**0**		

चौगुण

1	2	3	4	5	6
धाधीनाधा	तीनाधाधी	नाधातीना	धाधीनाधा	तीनाधाधी	नाधातीना
x			**0**		

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1. तीन ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

10.2. तीन ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

10.3. तीन ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

10.4. तीन ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

10.5. दादरा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 6

घ) 8

10.6. दादरा ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

10.7 दादरा ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 4

ख) 5

ग) 6

घ) 3

10.8. दादरा ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

10.9. तीन ताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धिं

ग) तिं

घ) ता

10.10 दादरा ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धी

ग) ती

घ) ता

10.4 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल तथा दादरा तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। तीन ताल 16 मात्रा तथा दादरा 06 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

10.5 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: घ)

10.2 उत्तर: ग)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: क)

10.5 उत्तर: ग)

10.6 उत्तर: क)

10.7 उत्तर: क)

10.8 उत्तर: क)

10.9 उत्तर: ग)

10.10 उत्तर: ग)

10.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. दादरा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. तीनताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 4. दादरा ताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

इकाई-11
झाला
(सितार वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	झाला (सितार वादन के संदर्भ में)
11.3.1	झाला का परिचय
11.3.2	झाला के प्रकार
11.3.3	भैरव राग का परिचय
11.3.4	भैरव राग का झाला
11.3.5	यमन राग का परिचय
11.3.6	यमन राग का झाला
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशंसित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में सितार वादन के संदर्भ में, झाला का परिचय, उसकी विशेषताओं आदि का वर्णन तथा उसे भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के समय, अधिकतर कलाकार अपने राग प्रस्तुति का समापन झाला वादन से ही करते हैं। झाला में स्वरों को चिकारी के साथ द्रुत गति से बजाया जाता है। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भैरव राग के स्वरूप के साथ-साथ उनमें बजाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक झाला के प्रकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से भैरव राग में झाला को सितार वाद्य पर बजा सकेंगें।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- झाला के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- झाला को विभिन्न रागों में बजाने की क्षमता विकसित करना।
- झाला को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, सितार वादन के अंतर्गत, झाला के स्वरूप तथा प्रकारों के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी, सितार वादन के अंतर्गत, झाला को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, सितार वादन के अंतर्गत, झाला को राग के अनुसार बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।

11.3 झाला का परिचय (सितार वादन के संदर्भ में)

11.3.1 झाला का परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत में कलाकार अपनी शास्त्रीय संगीत की जब प्रस्तुति देते हैं तो वह राग का वादन करते हैं। राग के प्रस्तुतीकरण के समय सबसे पहले आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत, तोड़े बजाने के बाद राग प्रस्तुतीकरण का समापन झाला वादन से करते हैं। झाला बजाने के लिए बाज की तार पर सामान्य रूप से एक प्रहार किया जाता है और चिकारी की तार पर 'रा' बजाया जाता है। 'रा' को सामान्य रूप से तीन बार बजाया जाता है।

अत: यह 'दा रा रा रा' बना। सितार में बाज की तार पर 'दा' तथा चिकारी के तार पर 'रा रा रा' बजाने को झाला कहते हैं। झाला मिज़राब द्वारा बाज की तार पर 'दा' और चिकारी की तार पर 'रा रा रा' बोल बजाए जाते हैं, तो इस क्रिया को झाला कहते हैं। यह द्रुत लय में बजाया जाता है। इसके साथ तबला वाद्य की संगति की जाती है।

सामान्य रूप से झाला वादन का समापन चक्रदार तिहाई के साथ किया जाता है जो अति द्रुत लय में होती है और सुनने में बहुत ही मधुर लगती है।

झाला वादन में राग के अनुसार बाज की तार पर अलग-अलग स्वरों को बजाया जाता है तथा चिकारी की तार पर 'रा' का प्रहार करते हुए वादन किया जाता है।

प्रारंभ में झाला वादन तीन ताल में ही किया जाता है क्योंकि इसके भाग चार-चार में बंटे होते हैं इसलिए दा रा रा रा का प्रयोग आसान हो जाता है।

11.3.2 झाला के प्रकार

वाद्य संगीत के अंतर्गत झाला को कई प्रकारों से बजाया जाता है। यह सभी प्रकार बाज की तार और चिकारी की तार पर बजने वाले प्रहारों 'दा रा' के अलग-अलग मिश्रण के सहयोग से बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए

1 दा रा रा रा,

2 दा रा रा, दा रा रा, दा रा,

3 दा रा रा रा रा रा रा रा,

4 दा रा रा रा रा रा रा, रा रा रा रा रा रा रा रा रा

5 दा रा रा रा रा रा रा रा, दा रा रा रा रा रा रा रा

6 दा रा रा, दा रा रा, दा रा रा, दा रा रा, दा रा, दा रा,

7 दा रा रा, दा रा, दा रा, दा रा रा, दा रा रा, दा रा रा,

8 दा रा रा, दा रा रा, दा रा, दा रा, दा रा रा, दा रा रा,

9 दा रा, दा रा, दा रा रा, दा रा रा, दा रा रा, दा रा रा,

10 दा रा रा, दा रा रा, दा रा रा, दा रा, दा रा, दा रा रा,

11 दा रा रा, दा रा रा, दा रा रा, दा रा, दा रा रा, दा रा,

12 दा रा रा, दा रा, दा रा दा,

13 दा रा, दा रा दा, दा रा दा,

14 दा रा रा रा रा, दा रा रा,

15 दा रा रा, दा रा रा रा रा,

16 दा रा रा रा रा रा, दा रा,

17 दा रा, दा रा रा रा रा रा,

18 दा रा, दा रा, दा रा, दा रा,

19 दा रा, दा रा, दा रा रा रा,

20 दा रा रा रा, दा रा, दा रा,

11.3.3 भैरव राग का परिचय

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - रिषभ, धैवत कोमल (<u>रे</u>, <u>ध</u>), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - कलिंगड़ा

आरोह- सा <u>रे</u> ग म प <u>ध</u> नि सां

अवरोह- सा नि ध, प म ग म रे सा

पकड़ - नि सा ग म धध प, म ग म रे रे सा

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी धैवत तथा संवादी रिषभ है। भैरव राग का समय दिन का प्रथम प्रहर माना गया है। भैरव राग में रिषभ को लगाने का अलग तरीका है। अगर हमने आरोह करते समय षड्ज से ऋषभ, गंधार, मध्यम तक जाना हो तो हम रिषभ का प्रयोग करते हैं, जैसे- सा रे, सा रे ग सा रे ग म।

परन्तु यदि हमने पंचम का प्रयोग करना हो तो हम रिषभ का लंघन करते हैं, जैसे- सा रे ग म, सा ग म प अर्थात् उत्तरांग की तरफ जाते समय (पंचम या उससे आगे) हम रिषभ का लंघन करते हैं। अवरोह करते समय रिषभ पर आंदोलन किया जाता है। यह आंदोलन दो, तीन बार तक किया जाता है।

इसी प्रकार धैवत पर भी आंदोलन होता है। धैवत पर आंदोलन आरोह तथा अवरोह दोनों तरफ होता है जबकि रिषभ में केवल अवरोह के समय ही आंदोलन किया जाता है; जैसे- ग म ग रे रे ऽ रे ऽ ग म नि ध ऽ ध ऽ प।

यह एक स्वतंत्र राग है। इसमें किसी अन्य राग की छाया नहीं आती है। कई अन्य रागों में भैरव अंग जोड़कर अन्य रागों की रचना की गई है, जैसे- भैरव बहार, अहीर भैरव आदि।

11.3.4 भैरव राग का झाला

राग–भैरव झाला ताल–तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ध़	–	–	–	ध़	–	–	–	ध़	–	–	–	ध़	–	–	–
प	–	–	–	म	–	–	–	ग	–	–	–	रे॑	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
सा	–	–	–	ध़	–	–	–	ध़	–	–	–	नी॑	–	–	–
सा	–	–	–	रे॑	–	–	–	रे॑	–	–	–	रे॑	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
ग	–	–	–	म	–	–	–	रे॑	–	–	–	रे॑	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
ध	–	–	–	नी॑	–	–	–	सा	–	–	–	रे॑	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
सा	–	–	सा	–	–	सा	–	सा	–	–	सा	–	–	सा	–

सा	–	–	–	रे॒	–	–	–	रे॒	–	–	–	ग	–	–	–
म	–	–	–	म	–	–	–	म	–	–	–	म	–	–	–
नी॒	–	–	–	सा	–	–	–	रे॒	–	–	–	ग	–	–	–
म	–	–	म	–	–	म	–	म	–	–	म	–	–	म	–
ग	–	–	–	म	–	–	–	रे॒	–	–	–	रे॒	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नी॒	–	–	–	सा	–	–	–	ग	–	–	–	म	–	–	–
प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–
ग	–	–	–	म	–	–	–	ध॒	–	–	–	ध॒	–	–	–
प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–
ध॒	–	–	–	प	–	–	–	म	–	–	–	प	–	–	–
ग	–	–	–	म	–	–	–	रे॒	–	–	–	रे॒	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
ग	–	–	–	म	–	–	–	ध॒	–	–	–	ध॒	–	–	–

प	–	–	प	–	–	प	–	प	–	प	–	–	–	प	–
ध	–	–	–	नी	–	–	–	ध	–	–	–	प	–	–	–
ग	–	–	म	–	–	ध	–	–	नी	–	–	नी	–	नी	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–
नी	–	–	–	सां	–	–	–	रें	–	–	–	रें	–	–	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–
गं	–	–	–	मं	–	–	–	रें	–	–	–	रें	–	–	–
सां	–	–	सां	–	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	–	सां	–
सां	–	–	–	नी	–	–	–	ध	–	–	–	ध	–	–	–
प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–
म	–	–	–	ग	–	–	–	म	–	–	–	रे	–	–	
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
सा	–	–	सा	–	–	सा	–	सा	–	–	सा	–	–	सा	–
ध	–	–	नी	–	–	सा	–	ग	–	–	म	–	–	रे	–

सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
सा	–	–	–	ग	–	–	–	म	–	–	–	प	–	–	–
ग	–	–	–	म	–	–	–	ध़	–	–	–	नी	–	–	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	रें	–	–	–	रें	–	–	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–

झाला को समाप्त करने के लिए सम से निम्न स्वरावली बजाई जाती है जिसके स्वर राग के अनुसार लगाए जातो हैं।

सां	सां	नी	नी	ध़	ध़	प	प	म	म	ग	ग	रे	रे	सा	सा
सां	सां	नी	नी	ध़	ध़	प	प	म	म	ग	ग	रे	रे	सा	सा
सां	सां	नी	नी	ध़	ध़	प	प	म	म	ग	ग	रे	रे	सा	सा

तिहाई

ध़	ध़	नी़	नी़	रे	–	ध़	ध़	नी़	नी़	रे	–	ध़	ध़	नी़	नी़
ध़	ध़	नी़	नी़	रे	–	ध़	ध़	नी़	नी़	रे	–	ध़	ध़	नी़	नी़
ध़	ध़	नी़	नी़	रे	–	ध़	ध़	नी़	नी़	रे	–	ध़	ध़	नी़	नी़

11.3.5 यमन राग का परिचय

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (म॑)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩी रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩी ध़ ऩी रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है।

इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

11.3.6 यमन राग का झाला

राग–यमन झाला ताल–तीन ताल

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ग	–	–	–	रे	–	–	–	नी़	–	–	–	रे	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नी़	–	–	–	नी़	–	–	–	रे	–	–	–	रे	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	नी़	–	–	–	ध़	–	–	–
प़	–	–	–	प़	–	–	–	प़	–	–	–	प़	–	–	–
म़	–	–	–	ध़	–	–	–	प़	–	–	–	प़	–	–	–
म़	–	–	–	ध़	–	–	–	नी़	–	–	–	रे	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नी़	–	–	–	ध़	–	–	–	नी़	–	–	–	रे	–	–	–
ग	–	–	–	ग	–	–	–	ग	–	–	–	ग	–	–	–
रे	–	–	–	नी़	–	–	–	नी़	–	–	–	रे	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नी़	–	–	–	रे	–	–	–	ग	–	–	–	ग	–	–	–

रे	–	–	–	ग	–	–	–	मं	–	–	–	ग	–	–	–
ग	–	–	–	मं	–	–	–	ग	–	–	–	ग	–	–	–
नी़	–	–	–	रे	–	–	–	ग	–	–	–	मं	–	–	–
ग	–	–	–	रे	–	–	–	ग	–	–	–	मं	–	–	–
प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–
मं	–	–	–	ध	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–
मं	–	–	–	प	–	–	–	ध	–	–	–	प	–	–	–
मं	–	–	–	प	–	–	–	मं	–	–	–	रे	–	–	–
ग	–	–	–	रे	–	–	–	नी़	–	–	–	रे	–	–	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नी़	–	–	रे	–	–	रे	–	ग	–	–	रे	–	–	रे	–
सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नी़	–	–	रे	–	–	ग	–	–	मं	–	–	प	–	प	–
प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–	प	–	–	–
मं	–	–	–	ध	–	–	–	नी	–	–	–	रें	–	–	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–

नी	–	–	–	रें	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–
नी	–	–	–	रें	–	–	–	गं	–	–	–	गं	–	–	–
मैं	–	–	–	मैं	–	–	–	गं	–	–	–	रें	–	–	–
नी	–	–	–	रें	–	–	–	गं	–	–	–	रें	–	–	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–
नी	–	–	नी	–	–	नी	–	रें	–	–	रें	–	–	रें	–
सां	–	–	सां	–	–	सां	–	सां	–	–	सां	–	–	सां	–
नी	–	–	–	रें	–	–	–	नी	–	–	–	ध	–	–	–
प	–	–	–	प	–	–	–	मै	–	–	–	ध	–	–	–
प	–	–	प	–	–	प	–	मै	–	–	प	–	–	प	–
ग	–	–	मै	–	–	मै	–	ग	–	–	रे	–	–	रे	–
नी़	–	–	रे	–	–	रे	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
नी़	–	–	–	ध़	–	–	–	नी़	–	–	रे	–	–	सा	–
सा	–	–	सा	–	–	सा	–	सा	–	–	सा	–	–	सा	–
नी़	–	–	–	रे	–	–	–	ग	–	–	–	मै	–	–	–
प	–	–	प	–	–	प	–	मै	–	–	–	ध	–	–	–

नी	–	–	नी	–	–	नी	–	ध	–	–	नी	–	–	रें	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–
नी	–	–	–	रें	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–
सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–	सां	–	–	–

सां	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	मं	मं	ग	ग	रे	रे	सा	सा
सां	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	मं	मं	ग	ग	रे	रे	सा	सा
सां	सां	नी	नी	ध	ध	प	प	मं	मं	ग	ग	रे	रे	सा	सा

नी़	नी़	रे	रे	ग	–	नी़	नी़	रे	रे	ग	–	नी़	नी़	रे	रे
नी़	नी़	रे	रे	ग	–	नी़	नी़	रे	रे	ग	–	नी़	नी़	रे	रे
नी़	नी़	रे	रे	ग	–	नी़	नी़	रे	रे	ग	–	नी़	नी़	रे	रे

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1. सितार में 'दा' का बोल .....की ओर प्रहार करने से निकलता है।

क) अंदर

ख) बाहर

ग) उपरोक्त दोनों (क) तथा (ख) सही

घ) उपरोक्त दोनों (क) तथा (ख) गलत

11.2. सितार में 'रा' का बोल .....की ओर प्रहार करने से निकलता है।

क) अंदर

ख) बाहर

ग) उपरोक्त दोनों (क) तथा (ख) सही

घ) उपरोक्त दोनों (क) तथा (ख) गलत

11.3. झाला का प्रयोग गायन के साथ भी किया जाता है।

क) सही

ख) गलत

11.4. झाला विलंबित लय में भी बजाया जा सकता है।

क) सही

ख) गलत

11.5. झाला को अति द्रुत लय में नहीं बजाते हैं।

क) सही

ख) गलत

11.6. झाला केवल सितार वाद्य पर ही बजाया जाता है।

क) सही

ख) गलत

11.7. झाला में चिकारी का प्रयोग अधिक किया जाता है।

क) सही

ख) गलत

11.4 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में कलाकार राग के प्रस्तुतीकरण के समय सबसे पहले आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत, तोड़े बजाने के बाद राग प्रस्तुतीकरण का समापन झाला वादन से करते हैं। झाला बजाने के लिए बाज की तार पर सामान्य रूप से एक प्रहार 'दा' किया जाता है और चिकारी की तार पर 'रा' बजाया जाता है। 'रा' को सामान्य रूप से तीन बार

बजाया जाता है। अत: यह 'दा रा रा रा' बना। सितार में बाज की तार पर 'दा' तथा चिकारी के तार पर 'रा रा रा' बजाने को झाला कहते हैं। यह द्रुत लय में बजाया जाता है। प्रारंभ में झाला वादन तीन ताल में ही किया जाता है क्योंकि इसके भाग चार-चार में बंटे होते हैं इसलिए दा रा रा रा का प्रयोग आसान हो जाता है।

11.5 शब्दावली

- झाला: सितार में, द्रुत लय में, बाज की तार पर 'दा' तथा चिकारी के तार पर 'रा रा रा' बजाने को साधारण शब्दों में झाला कहते हैं।
- लय: वादन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
-

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: ख)

11.2 उत्तर: क)

11.3 उत्तर: ख)

11.4 उत्तर: ख)

11.5 उत्तर: ख)

11.6 उत्तर: ख)

11.7 उत्तर: क)

11.7 संदर्भ

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. झाला के संदर्भ में लिखिए।

प्रश्न 2. झाला के कोई पांच प्रकार लिखिए।

प्रश्न 3. झाला को किसी भी राग में बजाएं

प्रश्न 4. झाला के कोई पांच प्रकार में बजाएं।

इकाई-12
तान तथा उसके प्रकार
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	तान तथा उसके प्रकार (गायन के संदर्भ में)
12.3.1	तान का परिचय
12.3.2	तान के प्रकार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA308PR की यह बारहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन के संदर्भ में, तान का परिचय, उसके प्रकारों, उसकी विशेषताओं आदि का वर्णन तथा उसे भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग के प्रस्तुतिकरण के समय, अधिकतर कलाकार अपने राग प्रस्तुति के समय तानों का प्रयोग करते हैं। तानों को विलंबित से लेकर द्रुत गति में गाया जाता है। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की तानों के स्वरूप के साथ-साथ उन्हें गाने की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से रागों में तानों को गा सकेगें।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तान के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- तानों को विभिन्न रागों में गाने की क्षमता विकसित करना।
- तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, तानों के स्वरूप तथा प्रकारों के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, तानों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, तानों को राग के अनुसार गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
-

12.3 तान का परिचय (गायन के संदर्भ में)

12.3.1 तान का परिचय

भरत द्वारा लिखित नाटयशास्त्र में तान शब्द का उल्लेख आधुनिक शास्त्रीय संगीत के सन्दर्भ में नहीं हुआ है। अपितु तानक्रिया का उल्लेख किया गया है। दतिल तथा मतंग आदि ने अपने ग्रन्थों में तान की चर्चा की है। भरत ने तानक्रिया के दो प्रकार बताएं हैं- प्रवेश और निग्रह। 'प्रवेश में वीणा में वर्जित स्वर की तंत्री को अगले या पिछले स्वर में मिला कर तानक्रिया सम्पन्न की जाती थी। ''निग्रह'' में वर्जित स्वर वाली तंत्री का स्पर्श नही किया जाता था।

मतंग के समय में शुद्ध तान और कूट तान का प्रचलन था। उस समय 84 शुद्ध तानों का उल्लेख मिलता है। पं. शारंगदेव ने पांच हज़ार चालीस कूट तानों का उल्लेख किया है। तानसेन के समय के ग्रन्थों में भी कूटतानों का वर्णन मिलता है।

आधुनिक समय में 'नगमातुल हिंद' में लिखा है, 'स्वरों के समूह को 'तान' कहते हैं, जिसका प्रयोजन राग में बढ़त करना होता है। यह कम से कम तीन स्वरों की होती है। 'मौदुनल मौसिकी' के अनुसार, 'तान वह है जो तीन सप्तक तक जाए'। इसी प्रकार पुस्तक 'नाद विनोद' में तीन सौ के लगभग कूट तानों के बारे में वर्णन मिलता है।

आधुनिक समय में पं. भातखण्डे ने तान की परिभाषा नहीं दी है, परन्तु तान किस प्रकार योग्य रीति से लेनी चाहिए इसका वर्णन अवश्य किया है। पं; भातखण्डे लिखते हैं, 'राग गायन को विस्तृत करने के लिए तानों का प्रयोग होता है।' तानों का मुख्य प्रयोजन गायन का वैचित्रय अधिक से अधिक बढ़ाना है।

पं. ओमकारनाथ ठाकुर जी कहते हैं, 'जब कोई अलंकार किसी राग के नियमों में बांधकर प्रयोग किया जाता है, तब वही 'तान' कहलाता है।' उस्ताद फैयाज़ खां का कहना है 'रागिनी की खुशामद करने, सजाने-संवारने के लिए जिन फिकरों का इस्तेमाल करते हैं, उसे 'तान' कहते हैं।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि तान स्वरों का वह समूह है जो राग के विस्तार के लिए प्रयुक्त होता है। यह स्वर समूह राग में विचित्रता, सौन्दर्य उत्पत्ति के लिए विभिन्न क्रमों में और विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त किया जाता है।

तान रचना विभिन्न लयों में की जाती है। यदि जिस लय में गीत गाया जा रहा हो, उसी लय में तान गाई जाए तो उसे बराबर लय की तान कहते हैं। इसी प्रकार दुगुन लय की तान, तिगुनी, चौगुनी या आठगुनी लय की तान कहेंगे। तान बनाते समय राग के आरोह-अवरोह, वादी-सम्वादी, विवादी और वर्जित स्वरों का ध्यान रखना पड़ता है और उन स्वरों को ध्यान में रख कर चार, पांच या उससे भी अधिक स्वरों को लेकर विभिन्न प्रकार की तानें बनाई जाती हैं।

तानों का प्रयोग ख्याल, टप्पा, ठुमरी आदि गायन में किया जाता है। तानों का मुख्य उदेश्य गायन में सौन्दर्य की वृद्धि करना है, अतः इनका प्रयोग अच्छी प्रकार से करने पर श्रोताओं के चित को आनन्द की प्राप्ति होती है।

12.3.2 तान के प्रकार

तानों के कई प्रकार भारतीय शास्त्रीय गायन में प्रचलित हैं:

- 1. शुद्ध तान

  जिस तान के स्वर क्रमानुसार होते हैं उसे 'शुद्ध तान' कहते हैं जैसे सा रे ग म प ध नि सां, नि ध प म ग रे सा। शुद्ध तान को सरल तथा सपाट तान भी कहते हैं। इसके स्वरों का क्रम सीधा होता है और यह गाने बजाने मे सरल होती है। आरम्भिक विद्यार्थियों को सर्वप्रथम यही तान सिखाई जाती है क्योंकि यह तान सीखने में सरल होती है और इस तान का अभ्यास करने से विद्यार्थी अन्य किठन तानों को सीखने में सक्षम हो जाते हैं।

- 2. कूट तान

  जिस तान में स्वरों का वक्र प्रयोग होता है अर्थात् स्वरों का क्रम टेढ़ा होता है उसे कूट तान कहते हैं। वक्र तान की चाल वक्र होने के कारण ही इसका नाम वक्र तान पड़ा है। यह तान गाने में कुछ कठिन होती है। अतः शुद्ध तान के अच्छे अभ्यास के बाद ही वक्र तान गाने में सुविधा रहती है। इस तान में स्वरों का क्रम इस प्रकार होता है - सा नि, रे सा, ग रे, म ग इत्यादि।

- 3. मिश्र तान

  इस तान में शुद्ध व कूट तान का मिश्रण होता है। जैसे - ग प म प म ग रे सा। इसका पहला स्वर समूह ग प म प वक्र है और दूसरा स्वर समूह म ग रे सा सपाट है। अतः मिश्र तान, वक्र और सपाट तान का मिश्रण है। यदि सपाट व कूट तान का अच्छा अभ्यास हो तो यह तान आसानी से गाई जा सकती है।

- 4. अलंकारिक तान

  इस प्रकार की तान का निर्माण राग में लगने वाले स्वरों के किसी अलंकार के आधार पर किया जाता है अर्थात् अलंकारों के नियमों का पालन इस तान के निर्माण में किया जाता है। इस प्रकार की तान में अधिकतर आरोह तथा अवरोह में स्वरों का क्रम नियमानुसार होता है जैसे - नि सा ग म प, ग म प नि सां, सां नि धा नि ध प, ध प म ग इत्यादि।

- 5. छूट तान

  इस तान क्रिया में तार सप्तक के किसी एक स्वर से शीघ्रता से लौटते हुए सपाट तान गाते हुए मध्य सा पर पहुंचना और सम दिखाना, इसे छूट तान कहते हैं। इस तान के लिए ताल पर पूरा अधिकार होना चाहिए और उसका अच्छा अभ्यास होना चाहिए क्योंकि इस तान के बाद गीत या गत का मुखड़ा कहना आवश्यक होता है।

- 6. जबड़े की तान

  इस क्रिया में तान जबड़े की सहायता से किया जाता है अतः इसे जबड़े की तान कहते हैं।

- 7. दानेदार तान

  इस तान में कण का प्रयोग अधिक होता है। अतः इसे कणयुक्त तान भी कहते हैं। इसमें प्रत्येक स्वर स्पष्ट रूप से अलग-अलग सुनाई देना चाहिए। हर स्वर पर झटका देकर मधुरता नष्ट नहीं करनी चाहिए। अतः इस तान के लिए अच्छे अभ्यास की आवश्यकता होती है।

- 8. फिरत की ता

  इस तान में स्वरों को बार-बार फिराया जाता है अर्थात् चक्र रूप में स्वरों का प्रयोग किया जाता है। जैसे - प ध प म, म ध प, ग म ग रे, सा रे रे ग।

- 9. हलक तान

  यह तान जीभ और गले का प्रयोग करते हुए ली जाती है अर्थात् जीभ को अन्दर-बाहर करते हुए इस तान का प्रयोग किया जाता है।

- 10. गमक तान

  इस तान में स्वरों को आन्दोलित करते हुए तथा हृदय पर ज़ोर देकर कहा जाता है। इन तानों को लय के विपरीत या बराबर लय में गाया-बजाया जाता है। जैसे- सा ऽ ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आदि को 'गमक तान' कहते हैं।

- 11. लड़त तान

  इस तान में सीधी व आड़ी कई प्रकार की लय मिली होती है। इसमें देखा जाता है कि दो-तीन स्वरों का प्रयोग अनेक बार अनेक प्रकार से कैसे किया जाता है। इस तान का एक प्रकार इस प्रकार है:- नि सा नि सा, रे रे रे रे, ग म ग म प प प प आदि।

- 12. पलट तान

  किसी तान को लेते हुए अवरोह करके लौट आने को 'पलट तान' कहते हैं। जैसेः- सा नि ध प म ग रे सा।

- 13. अचरक तान

  इस तान में प्रत्येक स्वर समान रूप से दो बार लिया जाता है जैसे सा सा, रे रे, ग ग आदि।

- 14. झटके की तान

  दुगुण या एक गुण में गाते समय चौगुण या आठगुण में गाने को झटके की तान कहते हैं।

- 15. सरोक तान

  इसमें चार-चार स्वरों को क्रमानुसार गाया जाता है। जैसे- सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध इत्यादि।

- 16. खटके की तान

  एक स्वर से दूसरे स्वर पर जब झटका देकर जाते हैं तो उसे 'खटके की तान' कहते हैं। इस प्रकार की तान में कणयुक्त स्वरों का प्रयोग होता है।

- 17. गिटकड़ी की तान

  जिस तान में दो स्वरों को शीघ्रता के साथ एक के बाद दूसरा लगाते हुए तान ली जाती है उसे 'गिटकड़ी की तान' कहते हैं जैसे- नि़ सा नि़ सा, सा रे सा रे।

- 18. राधांक तान

  इस तान में दो स्वर आरोह के और दो स्वर अवरोह के लिए जाते हैं। जैसे- सा रे रे सा, सा रे रे ग आदि।

- 19. बोल तान

  इन तानों में गीत के बोलों का प्रयोग तान के रूप में किया जाता है। जैसे

ग म रे सा म ध म प

गु णी ज न गा ऽ व त

गायन में गीत के बोलों को भिन्न-भिन्न स्वरों तथा तान पलटों के साथ गाना, 'बोलतान' कहलाती हैं। बोल तान का सरल अर्थ होता है 'बोलों की तान' अर्थात् किसी गीत के बोलों को विभिन्न प्रकार की तानों द्वारा प्रस्तुत करना। यह प्रकार गायन में बड़ा मधुर प्रतीत होता है। राग के स्वरों के माध्यम से गीत के बोलों का उच्चारण करते हुए आलाप करना, बोल बनाना कहलाता है और लय में सुन्दर अलंकारों व पल्टों के साथ इन्हीं बोलों को 'बोलतान' कहते हैं। बोलतान बनाते समय इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि किस बोल पर अधिक ज़ोर देना है तथा कौन से स्वर-समुदाय अधिक प्रयोग करने हैं। लय का ध्यान रखते हुए बोल तान तीन प्रकार की हो सकती है जैसे-

क. ठाह की बोलतान

ख. दुगुन की बोलतान

ग. चौगुन व आड़ लयों की बोलतान

बोल तान में अनेक लयकारियों का चमत्कार सुनने को मिलता है तथा साथ ही तबले पर भिड़न्त भी देखने को मिलती है।

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1. शुद्ध तान को अन्य किस ताम से जाना जाता है।

क) सपाट तान

ख) कूट तान

ग) छूट तान

घ) उपरोक्त दोनों (क) (ख) तथा (ग) गलत

12.2. जिस तान में कण का प्रयोग अधिक होता है उसे क्या कहते हैं।

क) सपाट तान

ख) दानेदार तान

ग) कण तान

घ) उपरोक्त दोनों (क) (ख) तथा (ग) गलत

12.3. जिस तान में स्वरों को आन्दोलित करते हुए गाते हैं उसे क्या कहते हैं।

क) आंदोलित तान

ख) दानेदार तान

ग) गमक तान

घ) उपरोक्त दोनों (क) (ख) तथा (ग) गलत

12.4. जिस तान में स्वरों को समान रूप से दो बार लिया जाता है उसे क्या कहते हैं।

क) आंदोलित तान

ख) दानेदार तान

ग) गमक तान

घ) अचरक तान

12.5. जिस तान में चार-चार स्वरों को क्रमानुसार गाया जाता है उसे क्या कहते हैं।

क) सरोक तान

ख) दानेदार तान

ग) गमक तान

घ) अचरक तान

12.6. जिस तान में गीत के बोलों का प्रयोग तान के रूप में किया जाता है उसे क्या कहते हैं।

क) सरोक तान

ख) बोल तान

ग) गमक तान

घ) अचरक तान

12.4 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में कलाकार राग के प्रस्तुतीकरण के समय सबसे पहले आलाप, विलंबित ख्याल, द्रुत ख्याल, तानों को गाने के बाद ही राग प्रस्तुतीकरण का समापन करते हैं। तान स्वरों का वह समूह है जो राग के विस्तार के लिए प्रयुक्त होता है। यह स्वर समूह राग में विचित्रता, सौन्दर्य उत्पत्ति के लिए विभिन्न क्रमों में और विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त

किया जाता है। तान रचना विभिन्न लयों में की जाती है। यदि जिस लय में गीत गाया जा रहा हो, उसी लय में तान गाई जाए तो उसे बराबर लय की तान कहते हैं। इसी प्रकार दुगुन लय की तान, तिगुनी, चौगुनी या आठगुनी लय की तान कहेंगे। तान बनाते समय राग के आरोह-अवरोह, वादी-सम्वादी, विवादी और वर्जित स्वरों का ध्यान रखना पड़ता है और उन स्वरों को ध्यान में रख कर चार, पांच या उससे भी अधिक स्वरों को लेकर विभिन्न प्रकार की तानें बनाई जाती हैं।

12.5 शब्दावली

- तान: तान, स्वरों का वह समूह है जो राग के विस्तार के लिए प्रयुक्त होता है।
- लय: वादन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ख)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: ख)

12.7 संदर्भ

डॉ. कीर्ति गर्ग से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तान के संदर्भ में लिखिए।

प्रश्न 2. तान के कोई पांच प्रकार लिखिए।

प्रश्न 3. पांच प्रकार की को किसी भी राग में गा कर सुनाएं

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग यमन में पांच अलंकारों को लिखिए।

प्रश्न 2. राग भैरव में पांच अलंकारों को लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन में पांच अलंकारों को बजाइए।

प्रश्न 4. राग भैरव में पांच अलंकारों को बजाइए।

प्रश्न 5. राग यमन में पांच अलंकारों को गाइए।

प्रश्न 6. राग भैरव में पांच अलंकारों को गाइए।

प्रश्न 7. सितार में मिजराब के बोलों के विषय में लिखिए।

प्रश्न 8. सितार वाद्य में मिजराब को पहनने की विधि को लिखिए।

प्रश्न 9. राग भैरव का परिचय, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 10. राग यमन का परिचय, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 11. राग यमन का परिचय, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित बजाइए।

प्रश्न 12. राग भैरव का परिचय, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित बजाइए।

प्रश्न 13. राग यमन का परिचय, द्रुत ख्याल को पांच-पांच तानों सहित गाइए।

प्रश्न 14. राग भैरव का परिचय, द्रुत ख्याल को पांच-पांच तानों सहित गाइए।

प्रश्न 15. राग यमन का परिचय, द्रुत ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 16. राग भैरव का परिचय, द्रुत ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 17. तीनताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 18. दादरा ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 19. राग यमन में झाला के विभिन्न प्रकारों को बजाइए।

प्रश्न 20. राग भैरव में झाला के विभिन्न प्रकारों को बजाइए।